



जीवन हमें बहुत कुछ सिखाता है-  
कई जिंदगियाँ जीने वाले अजीत जोगी

वाहरी मुंबई ! जिन भैया लोगों ने सेवा  
की उन्हें कष्ट के समय बेहाल छोड़ दिया



# सेन्सर टाइम्स

www.censortimes.com

डाक पंजीयन क्रमांक-एमपी/आईडीसी/1117/2019-2021

वर्ष-17

अंक-3

मासिक

1 जून 2020

पृष्ठ-12

मूल्य- पाँच रुपये

पाकिस्तान जैसी नहीं दिखती चीन के खिलाफ

## राष्ट्रवाद की भावना



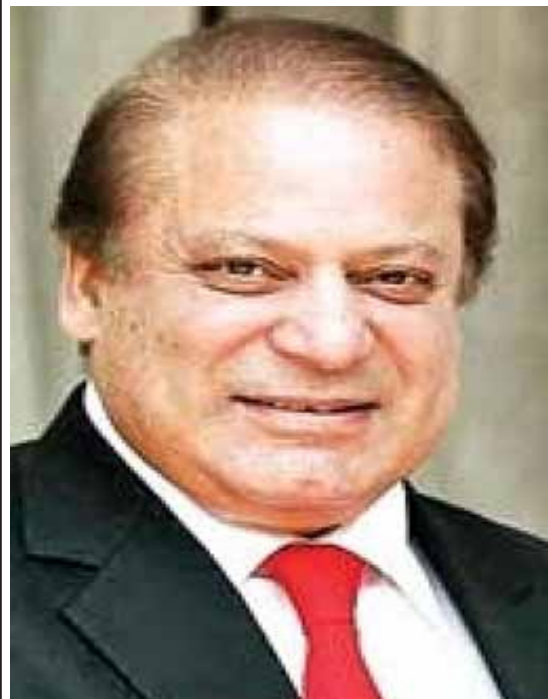
बुआ-बुआ कांग्रेस को यूपी में पाँव नहीं पसारने देंगे,  
भले प्रियंका कितने प्रयास कर ले

p3



पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के  
खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी

p12



अन्दर के पृष्ठ पर.....

कोरोना संकट ने पूरी दुनिया को जीवनशैली  
बदलने पर मजबूर कर दिया है P-7

लॉकडाउन से पर्यावरण को हुआ लाभ  
वर्क फ्रॉम होम बढ़ाया जाये P-6

मोदी नाम नहीं, मंत्र है जो ऊर्जा भरता है  
मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान P-12

असंतुलित विकास का नतीजा है प्रवासी  
मजदूरों की समस्या-अरुण कुमार P-12



## सम्पादक की कलम से

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) आजकल अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के निशाने पर आ गया है। डब्ल्यूएचओ को पूरी तरह से चीन वेंद्रित करार देते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रंप ने कहा कि इस वैश्विक संस्था ने कोरोना वायरस के संक्रमण की शुरुआत में गलत सलाह देकर इसे वैश्विक महामारी बना दिया है। अमेरिका ने आरोप लगाया है कि कोरोना को लेकर दी गई ताइवान की शुरुआती चेतावनियों को अनदेखा कर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) ने जन स्वास्थ्य पर राजनीति को तरजीह दी। ताइवान ने भी इस मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र निकाय प्रामुख की ओर से की गई आलोचना पर आक्रोश जाहिर किया है।

ट्रंप ने पिछले दिनों ट्वीट करके कहा—डब्ल्यूएचओ ने संक्रमण को फैला दिया है। कुछ कारणों से उसे अमेरिका से सबसे अधिक आर्थिक मदद मिलती है, लेकिन वह पूरी तरह से चीन पर केन्द्रीत है। हम इस मामले को अच्छे से देखेंगे। खुशनसीबी से मैंने उनकी शुरुआती दौर में चीन के साथ अपनी सीमाएं खुली रखने की सलाह को ठुकरा दिया था। आखिर उन्होंने इतनी गलत सलाह हमें क्यों दी? ट्रंप का बयान ऐसे समय में आया है जब पूरी दुनिया के देश डब्ल्यूएचओ की भूमिका की आलोचना कर रहे हैं। इस वैश्विक संगठन पर चीन की तरफदारी करने के गंभीर आरोप लग रहे हैं। इसके चलते ही कोरोना के संक्रमण ने महामारी का रूप ले लिया और पूरे विश्व में एक लाख से अधिक जानें चली गईं। विगत 31 जनवरी को संयुक्त राष्ट्र के इस स्वास्थ्य संगठन ने कोरोना वायरस संक्रमण के बावजूद चीन के लिए अपनी सीमाएं खुली रखने की सलाह दी थी। हालांकि इसी दिन अमेरिका ने चीन की यात्रा को लेकर प्रतिबंध लगा दिए थे। इसके बावजूद अब इस महामारी के कारण अकेले अमेरिका में हजारों मौतें हो चुकी हैं, करीब चार लाख लोग संक्रमित हो चुके हैं।

कोरोना वायरस ने पूरी दुनिया में अमेरिका को सबसे ज्यादा प्रभावित किया है। वह ऐसा पहला देश बन गया है, जहां एक ही दिन में दो हजार से ज्यादा लोगों की मौत हुई। जॉन हॉपकिन्स यूनिवर्सिटी के अनुसार पिछले 24 घंटे में कोरोना के कारण 2108 लोगों की मौत हुई है। यहां मृतकों की संख्या बढ़कर 18,761 हो गई है, जबकि पांच लाख तीन हजार 177 लोग संक्रमित हैं। उधर अमेरिका के न्यूयॉर्क में हालात काबू से बाहर हो रहे हैं। यहां रोजाना 500 से ज्यादा लोगों की मौत हो रही है। हालात यह हैं कि कब्रिस्तान भर चुके हैं और शवों को सामूहिक कब्रों में दफनाया जा रहा है। हालांकि महामारी शुरू होने के बाद ऐसा पहली बार हुआ है, जब यहां आईसीयू में भरा होने वाले मरीजों की संख्या कम हुई है। डोनाल्ड ट्रंप ने कहा कि वह डब्ल्यूएचओ पर खर्च की जाने वाली राशि पर रोक लगाने जा रहे हैं। ट्रंप ने आरोप लगाया कि जब मैंने यात्रा प्रतिबंध लगाया था तो वह उससे सहमत नहीं थे। वह गलत थे। वह कई चीजों के बारे में गलत रहे हैं। उनके पास पहले ही जानकारी थी। वह महीनों पहले इसके बारे में बता सकते थे।

## एक जीवन में कई जिंदगियाँ जीने वाले अजीत जोगी का जीवन हमें बहुत कुछ सिखाता है

प्र. संजय द्विवेदी

अजीत जोगी शक्ति चाहते थे जो साहित्य और संस्कृति की दुनिया उन्हें नहीं दे सकती थी। इसलिए शक्ति जिन-जिन रास्तों से आती थी, वह उन सब पर चले। वे आईपीएस बने, आईएएस बने, राजनीति में गए और सीएम बने। पावर का यह चक्का उन्हें प्रारंभ से था।



जिंद, जिजीविषा, जीवटता और जीवंतता एक साथ किसी एक आदमी में देखनी हो तो आपको अजीत जोगी के बारे में जरूर जानना चाहिए, पढ़ना चाहिए। छत्तीसगढ़ के पूर्व और प्रथम मुख्यमंत्री अजीत जोगी यानि एक ऐसा नायक जिसने बेहद खुरदरी जमीन से जिंदगी की शुरुआत की और आसमान की उन ऊंचाइयों तक पहुंचे, जहां पहुंचना किसी के लिए सपने से कम नहीं है। अजीत जोगी किसी की कृपा से नहीं बनते। वे खुद बने और अनेक को बनाया। उनकी सबसे बड़ी देन यही है कि उन्होंने हर अभावग्रस्त व्यक्ति को यह पाठ पढ़ाया कि आपकी परिस्थितियां आपको बड़ा बनने से रोक नहीं सकतीं, अगर आपमें हौसला है।

वे बिलासपुर जिले के छोटे से कस्बे पेंड्रा के पास जनजातियों के एक गांव जोगीसार में पैदा हुए लेकिन इस अध्यापक पुत्र के सपने बहुत बड़े थे। भोपाल से इंजीनियरिंग, आईपीएस, आईएएस बनने के बाद कलेक्टर और फिर बरास्ते राज्यसभा उनके मुख्यमंत्री बनने का सफर एक जादुई कहानी सरीखा है। साधारण परिस्थितियों को धता बताकर असाधारण सफलताएं प्राप्त करने की कहानी हैं अजीत जोगी।

बावजूद इसके उनकी जिंदगी में चैन कहां है। इस पूरी जिंदगी में सिर्फ एक चीज है, जो लगातार उपस्थित है, वह है संघर्ष। संघर्ष और उससे उपजी सफलताएं। मुख्यमंत्री रहते उनके तेज और ताप की कहानियां, उनकी दुर्घटना के बाद उनका ह्वील चेयर पर आ जाना और बिना थके, बिना रुके अहर्निश संघर्ष आपको कंपा देगा। किंतु अजीत जोगी शरीर से नहीं दिमाग से राजनीति करते थे। शरीर थका, लाचार हुआ पर उनका दिमाग चलता रहा। वे चुनौती देते रहे। जूझते रहे। अपनी शर्तों पर जीते रहे। आखिरी सांस तक वे छत्तीसगढ़ के लोकप्रिय नेताओं में एक बने रहे। उन्हें सुनने के लिए व्यग्र लोगों को मैंने अपनी आंखों से देखा है। उनसे मिलने का दीवानापन देखा है। ठेट छत्तीसगढ़ी में धाराप्रवाह और लालित्यपूर्ण भाषण से लोगों को बांध लेना उन्हें आता था। यह दीवानगी आखिरी दिन तक बनी रही।

छत्तीसगढ़ में होते हुए पत्रकारीय कर्म के नाते उनसे अनेक बार मिलना हुआ। वे मेरे आयोजनों में भी आए। कुछ किताबों के विमोचन में भी। अपनी असहमतियों को अलग रखकर दूसरे

विचारों को सम्मान देना उन्हें आता था। राजनीति में वे कुछ छोड़ते नहीं थे किंतु साहित्य और संस्कृति की दुनिया में वे थोड़ा स्पेस दूसरों को भी देते थे। उन्हें पसंद था कि उन्हें लोग लेखक, कवि और कहानीकार के रूप में जानें। वे दरअसल पढ़ने-लिखने वाले इंसान थे। बहुपठित और बहुविज्ञ। किंतु वे शक्ति चाहते थे जो साहित्य और संस्कृति की दुनिया उन्हें नहीं दे सकती थी। इसलिए शक्ति जिन-जिन रास्तों से आती थी, वह उन सब पर चले। वे आईपीएस बने, आईएएस बने, राजनीति में गए और सीएम बने। पावर का यह चक्का उन्हें प्रारंभ से था। वे कलेक्टर थे तो जननेता की तरह व्यवहार करते थे, जब मुख्यमंत्री बने तो कलेक्टर सरीखे दिखे। उनकी एक छवि में अनेक छवियां थीं। एक जिंदगी में वे कई जिंदगियां जीना चाहते थे। उन्हें याद करना जरूरी है और उनसे सीखना भी जरूरी है। वे अपनी ही रची कहानी के एक ऐसे नायक थे जिसे चलना तो पता था, किंतु पड़ाव और विश्राम के सूत्र उन्होंने सीखे नहीं थे। वे बहुतांश के अनुभवों में बेहद उदार नायक हैं, तो कई के लिए खलनायक।

ऐसी मिश्रित छवियों का यह नायक हमें सिखाता बहुत है। अपनी जिंदगी से उन्होंने हमें अनेक पाठ पढ़ाए हैं। एक तो किसी भी सामाजिक, आर्थिक स्थिति और परिवेश को चुनौती देकर आप पहली पंक्ति में अपनी जगह बना सकते हैं। दूसरा शारीरिक व्याधियों के बाद भी आप जो चाहे कर सकते हैं। अपने जीवन के आखिरी दिनों में एक पार्टी का गठन और उसे एक सशक्त विकल्प में पेश कर देना साधारण नहीं था जो उन्होंने कर दिखाया। अजीत जोगी से बात करते हुए, उन्हें सुनते हुए आपको जो अनुभव हुए होंगे वे विलक्षण थे। उनकी रेंज बहुत बड़ी थी। बहुत बड़ी। राजनीति में आकर उन्होंने खुद की दुनिया बहुत तंग कर ली। राजनीति उन्होंने जिस शैली में की उसने भी बहुत निराश किया। किंतु उन्हें जो करना होता था, उसे करते थे। उनके दोस्त हों, समर्थक हों या आलाकमान, जोगी के साथ जिसे चलना हो चले, करना वे अपना रास्ता खुद तय करते थे। जिंदगी के आखिरी दिनों में उनके लिए गए फैसलों को आत्मघाती जरूर कह सकते हैं, किंतु इस जिजीविषा का नाम अजीत जोगी है। आज जब वे इस दुनिया को छोड़कर जा चुके हैं तो यही कहना है कि उन-सा होना कठिन है। बहुत कठिन। मेरी भावभीनी श्रद्धांजलि।

भारतीय प्रशासनिक सेवा की अपनी प्रतिष्ठित नौकरी छोड़कर राजनीति में आए अजीत प्रमोद कुमार जोगी जिलाधिकारी से मुख्यमंत्री की कुर्सी तक पहुंचने वाले संभवतः अकेले शख्स थे। छत्तीसगढ़ में बिलासपुर जिले के एक गांव में शिक्षक माता-पिता के घर पैदा हुए जोगी को अपनी इस उपलब्धि पर काफी गर्व था और जब तब मौका मिलने पर अपने मित्रों के बीच वह इसका जिक्र जरूर करते थे। करीब दो दशक पहले अस्तित्व में आए छत्तीसगढ़ राज्य का पहला मुख्यमंत्री बनने का गौरव हासिल करने वाले जोगी का शुक्रवार को निधन हो गया। वह 74 वर्ष के थे। कुछ दिन पहले ही उन्हें हृदयाघात के बाद रायपुर के एक निजी अस्पताल में भर्ती किया गया था। राजनीति में आने से पहले और बाद में भी लगातार किसी न किसी से वजह से हमेशा विवादों में रहे जोगी पूर्व प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से बहुत प्रभावित थे और पत्रकारों तथा अपने नजदीकी मित्रों के बीच अक्सर एक किस्सा दोहराते थे। उनकी इस पसंदीदा कहानी के मुताबिक अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा के प्रोबेशनर अधिकारी के तौर पर जब उनका बैच तत्कालीन प्रधानमंत्री से मिला तो एक सवाल के जवाब में इंदिरा गांधी ने कहा, “भारत में वास्तविक सत्ता तो तीन ही लोगों के हाथ में है “डीएम, सीएम और पीएम।” युवा जोगी ने तब से यह बात गांठ बांध रखी थी। जब वह मुख्यमंत्री बनने में सफल हो गए तो एक बार आपसी बातचीत में उन्होंने टिप्पणी की कि हमारे यहां (भारत में) “सीएम और पीएम तो कुछ लोग (एच डी देवेगौड़ा, पी वी नरसिंहराव, वी पी सिंह और उनके पहले मोरारजी देसाई) बन चुके हैं, पर डीएम और सीएम बनने का सौभाग्य केवल मुझे ही मिला है।”



# बुआ-बबुआ कांग्रेस को यूपी में पाँव नहीं पसारने देंगे, मले प्रियंका कितने प्रयास कर ले

कांग्रेस और उसका 'पालनहार' गांधी परिवार लगातार इस कोशिश में रहता है कि किसी भी तरह से उसे उसकी खोई हुई सियासी पहचान वापस मिल जाए ताकि देश की सजा पर वह एक बार फिर काबिज हुआ जा सके और इसके लिए वह यूपी से ही रास्ता तलाश रहा है। कहने को तो देश को कोरोना संकट से कैसे बचाया जाए, इसको लेकर कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी की ओर से विपक्ष की एक बैठक बुलाई गई थी, लेकिन इस बैठक में के बारे में जो खबरें छन-छन कर आ रही थीं, उससे यह साफ था कि इस बैठक की पृष्ठभूमि में सियासत ज्यादा और कोरोना संकट की चिंता कम थी। इसीलिए समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ने विपक्ष की इस बैठक में हिस्सा लेने से इनकार कर दिया। इसे जहां एक ओर विपक्ष में फूट के तौर पर देखा जा रहा है, वहीं दूसरी ओर जह भी माना जा रहा है कि एसपी-बीएसपी कांग्रेस की पिछलग्गू बनकर नहीं रहना चाहती।



कांग्रेस और उसका 'पालनहार' गांधी परिवार लगातार इस कोशिश में रहता है कि किसी भी तरह से उसे उसकी खोई हुई सियासी पहचान वापस मिल जाए ताकि देश की सजा पर वह एक बार फिर काबिज हुआ जा सके और इसके लिए वह यूपी से ही रास्ता तलाश रहा है।

कांग्रेस और उसका 'पालनहार' गांधी परिवार लगातार इस कोशिश में रहता है कि किसी भी तरह से उसे उसकी खोई हुई सियासी पहचान वापस मिल जाए ताकि देश की सजा पर वह एक बार फिर काबिज हुआ जा सके और इसके लिए वह यूपी से ही रास्ता तलाश रहा है।

उत्तर प्रदेश के क्षेत्रीय क्षेत्र पालनहार और अखिलेश यादव नहीं चाहते हैं कि उनके सहारे कांग्रेस यहां अपनी 'सियासी पिच' मजबूत कर सके। इसीलिए सपा-बसपा नेता कांग्रेस को पटखनी देने का कोई भी मौका छोड़ते नहीं हैं। कौन नहीं जानता है कि 2019 के लोकसभा सभा चुनाव के समय किस तरह से अखिलेश-मायावती ने उत्तर प्रदेश की राजनीति से कांग्रेस को 'दूध की मक्खी' की तरह निकाल कर फेंक दिया था। इस पर कांग्रेस के 'अहम' को चोट भी लगी थी, लेकिन वह कर कुछ नहीं पाई।

सपा-बसपा से टुकड़ाई कांग्रेस के रणनीतिकारों ने तब यूपी फतह के लिए अपना 'ट्रम्प कार्ड' समझी वाली प्रियंका वाड़ा को आगे करके चुनावी बाजी जीतने की जो रणनीति बनाई थी, वह अंधे मुंह गिर पड़ी थी। कांग्रेस का खाता भी नहीं खुल पाता यदि सोनिया गांधी राबड्रेली से चुनाव जीत नहीं जातीं। उस समय कांग्रेस, बीजेपी को यूपी में पटखनी देकर मोदी को दिल्ली से दूर करने का सपना पाले हुए थी, जो आज भी वह पूरा करने की कोशिश में लगी है, लेकिन इसके लिए आज तक उसे न तो सपा-बसपा का 'सहारा' मिला है न राहुल-प्रियंका का जादू काम आया। यूपी में प्रियंका का 'प्रयोग' ठीक वैसे ही 'फ्लाप शो' रहा जैसा इससे पहले राहुल गांधी का रहा था।

बहरहाल, कांग्रेस लगातार सपा-बसपा पर

डोरे डालती रहती है, लेकिन दोनों ही दलों के नेता कांग्रेस को हाथ ही नहीं रखने देते हैं। इसीलिए तो अखिलेश और मायावती ने कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी की उस वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के जरिए होने वाली बैठक से भी दूरी बना ली थी जिसके सहारे सोनिया गांधी, मोदी सरकार को घेरने का सपना पाले हुए थीं। सोनिया की बैठक में भाग लेने के लिए सपा-बसपा को निर्मंत्रण देने से पहले अगर कांग्रेस नेता जरा भी दिमाग लगा लेते तो उन्हें माया-अखिलेश के सामने बौना साबित नहीं होना पड़ता। कांग्रेस ने यह कैसे सोच लिया कि उत्तर प्रदेश की सियासत में प्रियंका गांधी की बडती दखलंदाजी को नजरअंदाज करके सपा-बसपा उसके साथ खड़े हो जाएंगे। अगर कांग्रेसी हाल-फिलहाल में प्रियंका वाड़ा और कांग्रेस को लेकर अखिलेश और खासकर मायावती के बयानों पर नजर डाल लेते तो उन्हें हकीकत समझ में आ जाती और वह कांग्रेस की फजीहत होने से गांधी परिवार को बचा लेते।

दरअसल, कांग्रेस और उसका 'पालनहार' गांधी परिवार लगातार इस कोशिश में रहता है कि किसी भी तरह से उसे उसकी खोई हुई सियासी पहचान वापस मिल जाए ताकि देश की सजा पर वह एक बार फिर काबिज हुआ जा सके और इसके लिए वह यूपी से ही रास्ता तलाश रहा है। कहने को तो देश को कोरोना संकट से कैसे बचाया जाए, इसको लेकर कांग्रेस की अंतरिम अध्यक्ष सोनिया गांधी की ओर से विपक्ष की एक बैठक बुलाई गई थी, लेकिन इस बैठक में के बारे में जो खबरें छन-छन कर आ रही थीं, उससे यह साफ था कि इस बैठक की पृष्ठभूमि में सियासत ज्यादा और कोरोना संकट की चिंता कम थी। इसीलिए समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी ने विपक्ष की इस बैठक

में हिस्सा लेने से इनकार कर दिया। इसे जहां एक ओर विपक्ष में फूट के तौर पर देखा जा रहा है, वहीं दूसरी ओर जह भी माना जा रहा है कि एसपी-बीएसपी कांग्रेस की पिछलग्गू बनकर नहीं रहना चाहती।

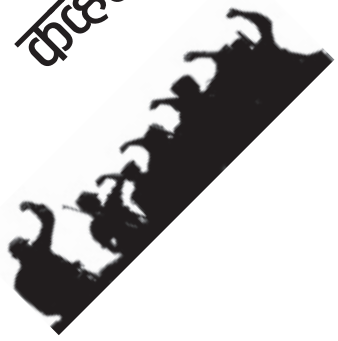
राजनीतिक जानकारों के अनुसार समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की राष्ट्रीय राजनीति में कोई विशेष रूचि नहीं रहती है। उत्तर प्रदेश में दोनों ही पार्टियां अपनी खोई ताकत को हासिल करने में जुटी हैं। ऐसे में अगर वे राष्ट्रीय स्तर पर कांग्रेस के नेतृत्व में कोई फैसला लेती हुई दिखाई देती हैं तो इससे उन्हें सूबे में नुकसान हो सकता है। कांग्रेस इस मौके को यूपी में लपक सकती थी। बात सपा की कि जाए तो पिछले विधानसभा चुनाव में सपा ने कांग्रेस के साथ गठबंधन करके काफी नुकसान झेला है। इसके अलावा प्रियंका भी अब प्रदेश की राजनीति में सक्रिय हैं, ऐसे में अगर एसपी कांग्रेस के साथ दिखाई देगी तो उससे प्रियंका को यूपी में मजबूती मिलेगी।

कांग्रेस के प्रियंका कार्ड को फेल करने के लिए ही सपा ने कांग्रेस के नेतृत्व में होने वाली बैठक में शामिल न होने का फैसला किया था। वहीं बसपा की बात करें तो मायावती कई बार यह कह चुकी हैं कि वह मोदी सरकार के खिलाफ किसी के भी साथ जा सकती हैं, इसी के चलते उन्होंने बीते लोकसभा चुनाव में सालों पुरानी दुश्मनी भुलाकर समाजवादी पार्टी के साथ गठबंधन तो कर लिया लेकिन कांग्रेस को तब भी मायावती ने गले नहीं लगाया था, जबकि अखिलेश चाहते थे कि यूपी में बीजेपी के खिलाफ कांग्रेस-सपा-बसपा मिलकर चुनाव लड़ें, लेकिन तब बुआ जी के मोहपाश में फंसे अखिलेश ने भी चुनावी फायदे के लिए कांग्रेस से दूरी बनाए रखना ही बेहतर समझा

था। बसपा सुप्रीमो मायावती कांग्रेस और खासकर प्रियंका से इस लिए भी नाराज रहती हैं क्योंकि प्रियंका अक्सर भीम आर्मी के चीफ चन्द्रशेखर आजाद के सहारे मायावती की दुखती रग पर हाथ रखती रहती हैं, जबकि प्रियंका को पता है कि भीम आर्मी के चीफ चंद्रशेखर के राजनीति में आ जाने से बीएसपी की मुश्किलें और बडती जा रही हैं। ऐसे में अगर एक बार फिर बीएसपी अन्य दलों के साथ खड़ी हो जाती है तो उसके दलित कार्ड पर सवाल उठने लगेंगे। बीएसपी चाहती है कि वह अपनी पुरानी दलित विचारधारा के साथ ही लड़ाई लड़े। और यूपी के दलित समाज को मैसेज दे कि बस वही है जो बिना किसी का साथ लिए दलितों के साथ खड़े हैं। मायावती कई मौकों पर विपक्ष की ऐसी बैठकों में अपनी प्रतिनिधि भेजती रही हैं लेकिन इस बार उन्होंने बैठक में भाग लेने से ही इनकार कर दिया।

लब्बोलुआब यह है कि सपा-बसपा नेता कतई यह नहीं चाहते हैं कि कांग्रेस उनके सहारे उत्तर प्रदेश में कदम बड़ा सके, क्योंकि दोनों ही दलों का जो वोट बैंक है वह उन्होंने कभी न कभी कांग्रेस से ही झटका था। इसी वोट बैंक को हासिल करने के लिए कांग्रेस और राहुल-प्रियंका छटपटा रहे हैं। लॉकडाउन के बीच कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी ने उत्तर प्रदेश में सक्रिय होकर योगी सरकार ही नहीं बल्कि सपा और बसपा जैसे दलों को भी बेचैन कर रखा है। कोरोना संकट के दस्तक के साथ ही प्रियंका गांधी लगातार सीएम योगी आदित्यनाथ को पत्र लिखने से लेकर तमाम मामलों को ट्वीट कर सरकार पर सवाल उठा रही हैं। प्रियंका ने घर वापसी करने वाले मजदूरों के मुद्दे पर हमलावर रुख अपना कर समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी जैसी क्षेत्रीय पार्टियों को पीछे छोड़ दिया है।

कफ़र स्टोरी



# पाक से झड़पों में राष्ट्रवाद की जो भावना दिखती है वह चीन के खिलाफ नहीं दिखती

अपने इस फौलादी और चट्टानी इरादे में हम लोग एक हद तक सफल भी होते आये हैं और होते रहेंगे, क्योंकि देशज कहावत भी है कि हिम्मत मर्दे, मर्दे खुदा। यहां पर यह स्पष्ट कर दें कि हम लोग शब्द में ही हमारे वीर बांकुरे सैनिक भी शामिल हैं।



सामान्यतः भारत-पाकिस्तान के बीच लगातार विवाद सीमा पर होते रहे हैं। हम भारतीय लोग पाकिस्तान को सबक सिखाने पर तर्क वितर्क करते हैं, लेकिन जब कभी कभार भारत-चीन के बीच सीमा पर विवाद की नौबत आती है तो भारत के नागरिकों में किसी प्रकार का तर्क वितर्क नहीं दिखता, जो होना अवश्यक चाहिये। भारतीय लोग इस बात का कवचार भी नहीं कर पाते कि जब पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, मालदीव, नेपाल, बर्मा आदि जैसे हमारे छोटे पड़ोसी देश हमारी उदारतावश कभी कभार हमसे सीधे मुँह बातचीत करने की हिम्मत करते आए हैं, तो फिर भारत जैसा सशक्त देश और भारतवासी चीन के साथ ऐसा वर्ताव क्यों नहीं कर सकते। सिर्फ यही वह बात है जिसे समझने और इसके अनुरूप नीतियां बनाने की आवश्यकता है, जिससे हमारा सियासी व प्रशासनिक लोग भी बचने की कोशिश करता आया है। लेकिन मोदी युगीन भारत में समर्थ चिंतन की जो अजेय धारा सिस्टम के प्रत्येक रंग को बता रही है, उसे सर्वत्र जनमानस का समर्थन कैसे मिले, इस ओर सभी भारतीय लोगों को सतत सचेष्ट रहना होगा।

दरअसल, सन 1962 के अप्रत्याशित भारत-चीन युद्ध में वीरों की भूमि कहे जाने वाले भारत की नहीं, बल्कि एक सदाशयी और साहित्यिक मिजाजी प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू के अव्यवहारिक चिंतन की हार हुई थी, गुटनिरपेक्षता और पंचशील सिद्धांत जैसी उनकी तत्कालीन अदूरदर्शितापूर्ण नीतियों की पराजय हुई थी। क्योंकि हिंदी-चीनी भाई-भाई के खटराग के समानांतर उन तैयारियों को उन्होंने कभी अहमियत नहीं दी, जो कि निज भाई के ही जानी दुश्मन

बन जाने की आशंकाओं के मद्देनजर हर जगह पर की जाती है। बाद के वर्षों में हमने महसूस किया है कि भूतपूर्व प्रधानमंत्रियों यथा- लालबहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, राजीव गांधी से लेकर मौजूदा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने अपने दृढ़ निश्चय से आसेतु हिमालय वासियों को यह समझा दिया कि चीन-पाकिस्तान जैसे खुटरमचाली देश यदि तनें तो आंख झुकाने या पीठ दिखाने की नहीं बल्कि आंख में आंख मिलाकर बात करने और सीने पर मुक्का तानने वाली मुद्रा दिखाने को उद्यत रहने वाला निर्भीक भाव प्रदर्शित करने की सख्त जरूरत है। अपने इस फौलादी और चट्टानी इरादे में हम लोग एक हद तक सफल भी होते आये हैं और होते रहेंगे, क्योंकि देशज कहावत भी है कि हिम्मत मर्दे, मर्दे खुदा। यहां पर यह स्पष्ट कर दें कि हम लोग शब्द में ही हमारे वीर बांकुरे सैनिक भी शामिल हैं।

इसमें जरा भी संदेह नहीं है बदलते परिपेक्ष्य में हमारा प्रशासन पाकिस्तान-चीन के हर परोक्ष या प्रत्यक्ष गठजोड़ से मुकाबले की स्पष्ट और व्यापक रणनीति प्रयोग में लाये, जिसमें साफ जनभागीदारी भी दिखे। भारतीय हितों की रक्षा करने और अंतर्राष्ट्रीय पटल पर उसे प्रभावशाली बनाये रखने के लिये यह आवश्यक व जरूरी है। यहां यह सोचना जरूरी है कि भारत-चीन के सैनिकों के परस्पर आमने सामने होते ही भारतीयों में भी वही जज्बा दिखना चाहिए, जो कि भारत-पाकिस्तान के सैन्य विवाद व लड़ाई के मौके पर दिखाई देता है। यह भारत सबका है, लेकिन ऐसे अहम मौकों पर समाज के एक वर्ग में जिस उत्साह का अभाव महसूस किया जाता है, वैसे भारतीय इस बात का विचार क्यों नहीं करते कि देश के खातिर

सीमा पर चीनी सैनिकों से लड़ने ओर उन्हें पराजित करने का माद्दा दिखाने वाले हमारे वीर सेनानी तब क्या बीतती होगी, जब उन्हें यह पता चलता होगा कि सम्पूर्ण भारत के लोगों का जनसमर्थन हासिल नहीं है!

इस बात में जरा भी संदेह नहीं कि त्वरित प्रशासनिक सहयोग और समुचित जनसमर्थन के मिलते रहने से ही हमारे वीर सैनिकों व उनके सहयोगियों का मनोबल सातवे आसमान पर रहता है। इसके लिए भारतीय अपने अन्दर के जनतांत्रिक शत्रुओं जैसे जातिवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद, वर्गवाद, भाषावाद और सम्पर्कवाद जैसी कमियों, उनमें निर्मित खामियों से आगे निकल कर एक स्वर में चर्चा करने की अथक कोशिश करनी होगी। यह तो मानना पड़ेगा कि मई के प्रारंभिक सप्ताह में भारत-चीन के सैनिकों के बीच सिक्किम में हुई ताजा लड़ाई के कुछ खास निहितार्थ हैं, जिन्हें समझने, समझाने और उसके मुताबिक ही भावी रणनीति अख्तियार करने की जरूरत है।

प्रथम, देश और विदेश के स्तर पर भारत और उसके प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सियासी कद से चीन-पाकिस्तान के की सेहत खरात होती रही है इससे उनको जो अच्छी खासी परेशानी होती है, उसका बस एक ही लक्ष्य है कि लोग सैन्य, कूटनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सियासी मोर्चे पर सतत संचेतनशील रहते हुए अपेक्षित सावधानी बरतें। क्योंकि जिस तरह से भारत की विविधता में एकता के दृष्टिकोण को खंडित कर भारत को अनेक हिस्सों में विभक्त करने का के सपने चीन स्वयं देखकर पाकिस्तान को भी उसे दिखाता आया है, उसका अब

विकल्प है, वह है उनके दाँत खट्टे कर देना! खुद से भी और दुनियादारी के मोर्चे पर भी, जैसा कि पीएम मोदी ने किया है और इस बारे में लगातार प्रयासरथ है।

द्वितीय, भारत-चीन के राजनितिक सम्बन्धों में विवाद की जो दो मुख्य वजहें हैं, उसमें भारत व उसके मित्र देशों के साथ, अमेरिका व उसके मित्र देशों के आर्थिक व सैन्य हितों से पारस्परिक तालमेल बिठाने की अन्दर की कोशिशें हैं, तो दूसरा भारत व उसके प्रति सहानुभूति रखने वाले मित्रवत देशों के साथ वैश्विक कूटनीतिक मंच पर हमारे सबसे भरोसेमंद मित्र देश रूस व उसके समर्थक देशों के कूटनीतिक, सैन्य व व्यापारिक हितों से पारस्परिक सामंजस्य बिठाने के अन्दर के प्रयास हैं, जिनसे अपना गहरा नाता रखती हैं। वहीं, चीन की भी यह सोचता व चाहता है कि भारत के दिल में उसके और उसके देशों के प्रति भी अमेरिका और रूस परस्त जैसा ही कूटनीतिक, आर्थिक व सैन्य रणनीतिक प्रेम दर्शाये, ताकि अमेरिका-रूस को वह अपने अनुसार संतुलित रख सके। चीन से पूर्व से कड़वे अनुभव के दृष्टिकोण और विगत कुछ वर्षों में उसने अनेकों बार प्रदर्शित दांव-प्रतिदांव के दृष्टिकोण से भारत उस पर किसी भी प्रकार से भरोसा नहीं सकता है क्योंकि देश के सर्वप्रथम प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू से चीनी ने जो विश्वासघात किया और 1962 के दिल पर जो घाव दिए, उसका भरना बहुत मुश्किल है। और तो और तब जबकि वैश्विक दुनियादारी में पाकिस्तान व वहां के आतंकियों की वह खुली हिमायत करता है। यदि भारत अपने पूर्व के इतिहास की उपेक्षा करके चीन की सहानुभूति प्राप्त करने वाला कोई भी दांव लगाता है तो वह भविष्य में उस पर ही नुकसान देय हो सकता है।

इस बात में जरा भी संदेह नहीं कि त्वरित प्रशासनिक सहयोग और समुचित जनसमर्थन के मिलते रहने से ही हमारे वीर सैनिकों व उनके सहयोगियों का मनोबल सातवे आसमान पर रहता है। इसके लिए भारतीय अपने अन्दर के जनतांत्रिक शत्रुओं जैसे जातिवाद, सांप्रदायिकता, क्षेत्रवाद, वर्गवाद, भाषावाद और सम्पर्कवाद जैसी कमियों, उनमें निर्मित खामियों से आगे निकल कर एक स्वर में चर्चा करने की अथक कोशिश करनी होगी। यह तो मानना पड़ेगा कि मई के प्रारंभिक सप्ताह में भारत-चीन के सैनिकों के बीच सिक्किम में हुई ताजा लड़ाई के कुछ खास निहितार्थ हैं, जिन्हें समझने, समझाने और उसके मुताबिक ही भावी रणनीति अख्तियार करने की जरूरत है।



इसलिए भारतीय प्रशासन व उसका नेतृत्व को हरदम चौकस व सतर्कता के साथ रहना है।

तीसरा, सिक्किम के नाथूला सीमा पर दोनों देशों के फौजियों के बीच जिस प्रकार मारपीट और पत्थरबाजी हुई, उससे दोनों देशों के सैनिकों की मनोदशा का परिचय मिला जब यह टकराव लगभग बीस हजार फुट की ऊंचाई पर हुआ हो। दोनों देशों के स्थानीय नेतृत्व की आपसी चर्चा से हालात को बिगड़ने से बचा हो, तो सवाल फिर वही कि ऐसा ही एक अन्य विवाद तो पूर्वी लद्दाख के पैंगोंग लेक के उत्तर की ओर भी हुआ है। यह तो एकदम स्पष्ट है कि डोकलाम विवाद के तीन वर्ष बाद हुई इस विवाद की अवधि और अंतराष्ट्रीय परिस्थिति, दोनो विचार करने वाली है, वो भी तब जबकि भारत, पाकिस्तान की तरफ से हो रही अपेक्षाकृत इससे भी ज्यादा और खूनी विवादों का करारा जवाब दे रहा हो।

चौथा, सामरिक रूप से नाथूला का विशेष महत्व है। इसलिए इस अहम टकराव के तीन विशेष कारण बताये जा सकते हैं। एक कारण यह है कि पूरा इलाका बर्फ़ीला है, जहां गर्मियों के मौसम में बर्फ पिघलने के बाद ही दोनों देशों की सेनाओं ने अपने-अपने क्षेत्रों में पेट्रोलिंग की जाती है और इसी बारे में कभी कभार उनका आमना-सामना भी हो जाता है, जिसे प्रोटोकॉल के तहत सुलझाया जाता है। दो, दोनों राष्ट्रों के बीच सीमा के चिन्ह तक नहीं हैं, जिससे सैनिक अक्सर आमने सामने आते-जाते रहते हैं। तीन, चीनी सेना वहां रोड बनाने का प्रयास कर रही है, जिसका भारतीय विरोध होना स्वाभाविक है। यह भी जानकारी में आया है कि चीन अपनी चुंबी घाटी में रोड बना चुका है, जिसे अब और विस्तार देना चाहता है।

पांचवां, हाल में ही हुआ विवाद अकस्मात नहीं बल्कि चीन की सोची समझी रणनीति का हिस्सा है। वास्तव में जितने लंबे समय के बाद भारत-चीन के सैनिकों के बीच यह विवाद हुआ है, इसके मुख्य कारण गिलगित-बाल्टिस्तान पर भारत की आक्रमण रणनीति के साथ साथ कोरोना के मोर्चे पर चीन का अपने ही बिछाये जाल में बुरी तरह से घिर गया है। चीन जब भी घरेलू मोर्चे पर घिरता है तब वह अपने देश में राष्ट्रवाद की भावना पैदा कर अपने नागरिकों का ध्यान मूल मुद्दे से हटाने की कोशिश करता है। स्पष्ट शब्दों में कहें तो ऐसी घटनाएं आकस्मात नहीं हुई बल्कि चीन ने सोची समझी रणनीति के तहत तनाव पैदा करने की कोशिश की है ताकि भारतीय नेतृत्व उसके दबाव में रहे और पाकीस्तान के विरुद्ध आक्रामक नहीं अपनाये।

छठा, वर्ष 2017 में भारत-चीन सीमा पर अवस्थित डोकलाम में 72 दिनों तक ऐसे ही विवाद का वातावरण बना था, क्योंकि तब भी दोनों देशों की सीमाओं में चीन द्वारा सड़क बनाने पर दोनों सेनाओं के बीच लंबा विवाद व तनाव चला था। इसके बाद 16जून 2017 को शुरू हुए विवाद आखिरकार दोनों राष्ट्र की कोशिश के बाद 28अगस्त 2017 को समाप्त हुआ था क्योंकि तब भारत ने चीन को रोड बनाने से रोक दिया था। हालांकि, चीन का दावा था कि वह अपने इलाके में रोड बना रहा था। वहीं, अगस्त 2017 में भी दोनों देशों के सैनिकों में लद्दाख में झील के पास विवाद हुआ था। उसके बाद मामला ठण्डा पड गया था।

सातवां, पूर्वी लद्दाख सेक्टर में भी गत 5-6मई की रात भारत-चीन सैनिकों में विवाद हुआ था। दोनों तरफ से सैनिक आपस में

भिड गये थे, लेकिन इसे भी वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तय प्रोटोकॉल के तहत इसे स्थानीय स्तर पर सुलझा लिया गया। भारत चीन के बीच 3489 किलोमीटर लंबी सीमा है जिसका लगभग 220 किलोमीटर हिस्सा सिक्किम में आता है। इसलिए, सीमा विवाद को लेकर भारत और चीन के सैनिकों के बीच अस्थाई और छिटपुट विवाद होते रहते हैं। लेकिन इस बार की झड़प काफी समय बाद हुई है। दोनों सेनाओं के बीच ऐसी तनातनी में सख्त प्रोटोकॉल के तहत भले ही मामला सुलझा लिया जाता है। दोनों देशों के लिए अहम और महत्वपूर्ण बात यह है कि विवाद और तनाव के शीर्ष पर पहुंचने तक दोनों सेनाएं गोलाबारी नहीं करती। यही वजह है कि भारत-चीन सीमा पर दोनों सेनाओं में मारपीट या पत्थरबाजी जैसी घटना की ही खबर आती है।

आठवां, भारतीय सेना की इन तर्कों में वजन है कि सीमाएं स्पष्ट नहीं होने के कारण ऐसी छोटे मोटे विवाद होते रहते हैं। इस बार दोनों पक्षों के ज्यादा उग्र हो जाने से सैनिकों को चोट आई है। बाद में बातचीत के बाद दोनों पक्ष शांत हो गए हैं, क्योंकि सेनाएं तय प्रोटोकॉल के हिसाब से ऐसे मामले आपसी बातचीत से सुलझा लेती हैं। दूसरी ओर, कतिपय रक्षा विशेषज्ञ चीन के इस आक्रामक व्यवहार को कोविड-19 की वजह से उस पर बढ़ रहे अंतराष्ट्रीय दबाव से भी जोड़कर देखते हैं, जो असत्य नहीं है। इन दिनों चीन जिस तरह से अपने पड़ोसियों को डराने व धमकाने का प्रयास कर रहा है, उसके पीछे की मुद्दे की बात यह है कि ऐसे सभी देश वैश्विक मंच पर उसके विरुद्ध जांच करने की पश्चिमी देशों की मांग का समर्थन ना करें। चाहे नेपाल से संबंधीत माउंट एवरेस्ट पर कब्जा करने की चाल हो, या फिर जापान नियंत्रित सेनकाकु द्वीप में पिछले कुछ समय से चीन के जहाजों द्वारा अतिक्रमण करने की बात, सबके पीछे उकसाने या भयभीत करने की उसकी फितरत शामिल है।

नवम, यह सबकुछ तब हो रहा है जब अप्रैल 2018में चीन के वुहान में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीन केराष्ट्रपति शी जिनपिंग की पहली अनौपचारिक चर्चा में दोनों नेताओं ने भरोसा और समझ बढ़ाने की बातचीत को मजबूत करने के उद्देश्य से अपनी-अपनी सेनाओं के लिए रणनिति जारी करने का फैसला किया था। उसके बाद, पिछले साल भी तमिलनाडु में देश के नरेंद्र मोदी और शी जिनपिंग के बीच द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत करने पर विचार किया था। इसलिए भारतीय नेतृत्व को और अधिक सतर्क रहने की जरूरत भी है क्योंकि विश्व विरादरी में दो मुहा सांप है तो वह चीन ही है।

दशम, सह सभी को जानना जरूरी है कि सिक्किम के उत्तरी हिस्से में नाथूला तकरीबन 5259 मीटर की ऊंचाई पर स्थित एक दर्रा है जिस पर चीन कई वर्षों से अपना होने का दावा कर रहा है। 1962 के युद्ध के बाद भी उसने कई बार इस दर्रा को लेकर दावा किया है। खैर, इस तरह के विवाद यहां पहले भी हुई हैं और भविष्य में भी होते रहने की संभावित हैं। ऐसा इसलिए कि अंतराष्ट्रीय सीमांकन नहीं के कारण से गर्मी के महीनों में अक्सर चीन के सैनिक अपना आपा खोकर अतिक्रमण की कोशिश करते हैं जिससे विवाद की स्थिति बन जाती है। फिलहाल दोनों पक्षों में बातचीत के बाद हालात सामान्य नजर आ रहे है। लेकिन ये कब तक ऐसे बने रहेंगे, इस बारे में किसी निष्कर्ष पर पहुंचना कठीन व जोखिम भरा काम है। इसलिए अत्यंत सावधानी जरूरी है।

-अजीब सुकनी



इस लेख में आप मुंबई को कोई एक शहर का नाम नहीं बल्कि सभी बड़े नगरों व प्रवासी मजदूरों को रखने वाले राज्यों का एक प्रतिनिधि नाम समझें। मुंबई शब्द को एक प्रवृत्ति मानें जो इन दिनों मेहनतकश, गरीब और गांव छोड़कर शहर आये हुए लोगों को हिकारत, नीची और उपेक्षा भरी दृष्टि से देख रही है। मुंबई उस आचरण का नाम है जो मजदूरों के प्रति अपने दायित्व की अनदेखी कर यूज एंड थ्रो की नीति अपना रहा है। ऐसे महानगर, ऐसे राज्य, इनकी राज्य सरकारें इनका प्रशासन, यहाँ के उद्योगपति सभी को मुंबई शब्द से संबोधित किया है इस लेख में। वस्तुतः मुंबई में यूपी बिहार से आये हुये मजदूरों को भैया कहकर संबोधित किया जाता है। बड़ा अजीब है कि बड़ी ठसक, अकड़, ऐंठन वाली और नकचढ़ी मुंबई और मुंबई के लोग, यूपी बिहार से आये हुए इन बेहद श्रमशील लोगों को भैया कहकर पुकारते हैं। किंतु एक बात और ध्यान रखिये, भैया शब्द को मुंबईया लोग आदरसूचक नहीं व्यंग्यात्मक लहजे में उपयोग करते हैं। यूं भी कहा जा सकता है कि भैया वहां हिकारत भरा शब्द है। यदि आपने किसी मुंबईकर को भैया कहकर पुकारा तो वह बुरा मान जाएगा और आपको अशिक्षित, अनकलचर्ड के साथ-साथ भैया लोगों की श्रेणी में ही खड़ा कर देगा।

मुंबई जैसे समस्त बड़े नगर और औद्योगिक क्षेत्रों व सेज वाले राज्यों में यूपी, बिहार, मप्र, झारखंड, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों से गये श्रमिकों के बल पर ही सारी व्यवस्थाएं चलती हैं। बड़े बड़े नगर, महानगर इन प्रवासी श्रमिकों के पसीने की सिंचाई से हरे भरे रहते हैं। किंतु यह भी सच है कि ये नगर इन मजदूरों को भले भैया जैसे अच्छे शब्द से पुकारें किंतु पुकारेंगे उपेक्षा, उपहास और उलाहना देकर ही और देखेंगे तो बुर्जुआ दृष्टि से ही। मुंबई जैसे बड़े संस्कारित और आर्थिक राजधानी कहे जाने वाले नगर ने तो भारत के हिंदी भाषी पट्टे का एक बड़ा मधुर संबोधन ‘भैया’ की चमड़ी ही उधेड़ डाली है।

हाल ही के दिनों में जब मुंबई जैसे बड़े नगरों में गये इन प्रवासी मजदूरों के घर लौटने का अनवरत किस्सा प्रारंभ हुआ तो खयाल आया कि ये लोग किस प्रकार बड़े नगरों की अर्थ व सामाजिक व्यवस्था का आधारस्तंभ बने हुए थे। मुंबई के धोबी, रसोइया, चौकीदार, झाइवर, माली, सिक्युरिटी गार्ड, सब्जीवाला, दूधवाला, पेपरवाला, फूलवाला, बच्चे की देख रेख करने वाला, चाय वाला, समोसे कचौड़ी वाला, गुपचुप वाला, रिक्शेवाला, टैक्सीवाला आदि आदि सभी लोग यूपी बिहार से आये भैया लोग ही तो हैं। इन भैया लोगों ने मुंबई को सब कुछ दिया किंतु मुंबई ने इन्हें आज संकट की इस घड़ी में अपनी देहरी से भूखा ही लौटा दिया। (पुनः स्मरण करा दूं कि मुंबई से आशय समस्त बड़े नगरों से है और यूपी बिहार के भैया से आशय इन नगरों में सभी राज्यों से गये मजदूर वर्ग से है)। जिन कांधों पर चढ़कर मुंबई और उसके व्यापारी, उद्योगपति चढ़कर इटलाते थे उन कांधों को इस आर्थिक राजधानी ने तनिक-सी कठिनाई आने पर दूध में से मक्खी की तरह निकाल फेका। किसी ने इन मजदूरों की ओर पलटकर देखा भी नहीं। इन्हें वेतन नहीं दिया, भोजन नहीं दिया, गाड़ी नहीं दी, पैरों में चप्पल नहीं दिया, तन पर कपड़ा नहीं दिया और तो और मन पर सांत्वना भी नहीं दिया। पूरा जीवन इन मजदूरों के पसीने का क्रीम पाउडर बनाकर अपना चेहरा चमकाने वाली मुंबई इतनी निष्ठुर, पत्थरदिल और सौतेली निकली कि रिश्तों नातों पर से विश्वास ही उठा गई। आज पूरा ग्रामीण भारत समूचे नगरीय भारत से कहने को मजबूर है कि- बड़ा काला दिल है रे तेरा मुंबई ! तू तो दोबारा चेहरा दिखाने लायक भी न रही !!

कोरोना कालखंड की गाथाएं जब भी लिखी जाएंगी तो मरकज

## वाह री मुंबई ! जिन भैया लोगों ने सेवा की उन्हें कष्ट के समय बेहाल छोड़ दिया

**मुंबई जैसे समस्त बड़े नगर और औद्योगिक क्षेत्रों व सेज वाले राज्यों में यूपी, बिहार, मप्र, झारखंड, छत्तीसगढ़ आदि राज्यों से गये श्रमिकों के बल पर ही सारी व्यवस्थाएं चलती हैं। बड़े बड़े नगर, महानगर इन प्रवासी श्रमिकों के पसीने की सिंचाई से हरे भरे रहते हैं।**



के जमातियों और प्रवासी मजदूरों की कथा के साथ ही लिखी जाएगी। प्रवासी मजदूरों की कथा उन राज्यों के शून्य दायित्व बोध के साथ लिखी जाएगी जिन राज्यों ने अपने यहां निवास कर रहे इन बाहरी मजदूरों की तनिक-सी भी चिंता फिक्क नहीं की। प्रवासी मजदूरों का उपयोग करने वाले प्रमुख 4-5 राज्य इस विषय में बेहद असंवेदनशील, निष्क्रिय व राजनीतिबाज सिद्ध हुये, जिन श्रमिकों के भरोसे इन राज्यों ने अपना तंत्र और ताना बाना खड़ा किया था उन श्रमिकों को इन राज्यों ने अपने अपने कार्यस्थलों पर रोके रखने हेतु तनिक-सी भी चिंता नहीं की और न ही कोई नीति या योजना ही बनाई।

मुंबई से सैंकड़ों, हजारों किमी की अपने गांव तरफ की यात्रा करते हुए ये इन सारे मजदूरों के दिल में जो विचार आ रहे होंगे वो सारे यदि लिख लिए जाएं तो विधाता के आंचल की सारी ममता ही समाप्त हो जायेगी। वो तो अच्छा है कि ये मजदूर केवल सोचना जानते हैं लिखना नहीं जानते। यदि ये मजदूर मुंबई से अपने गांव की इस यात्रा का हाल लिख देते तो उससे धरा पर इतनी पीड़ा और व्यथा उपजती कि ईश्वर को तुरंत ही एक बार फिर पृथ्वी पर समुद्रमंथन करना पड़ता। इन मजदूरों के गिरे पसीने और आंसुओं की बूंदों से क्या क्या उपजने वाला है और वह उपजा हुआ हमारी पीढ़ियों को क्या क्या कष्ट देने वाला है, इसकी तुम कल्पना भी नही कर सकते रंगीन मुंबई वालों !!! इन भैया मजदूरों के पैरों में जो छाले उगे हैं, जो बिवाइयां उठ आई हैं, जो घाव सिलक मार रहें हैं वो सब आपको अपनी व्यवस्था के खाता बही में लिखने पड़ेंगे। गांव की जिन बेटियों ने तुम्हारे बच्चों की छिछि धोई और गंदगी उठाई, जिनने तुम्हारे बच्चों को अपना लाल समझा तुमने उन्हें गर्भवती अवस्था में मुंबई से बाहर निकाला, हजार किमी चलाया और सड़कों पर भरी जेट की दुपहरिया में उनका प्रसव कराया; इसका हिसाब कैसे करोगे मुंबई के सेठ? ! गांव अपनी बेटी के इस सड़क पर प्रसव को याद रखेगा। गांव याद रखेगा कि तुम्हारे जिन कल-कारखानों, मोटरों, गाड़ियों में वह दिल लगाकर रात-दिन काम किया करता था उनके मालिकों को भगवान ने दिल की जगह पर बाय डिफॉल्ट ही एक पेसमेकर लगाया हुआ है। अरी कलमुंही मुंबई, तू इतना तो याद रखती कि तेरे हर प्रसव की पीड़ा को इन यूपी बिहार के भैया लोगो ने ही झेला है। निठुर, बिठुर मुंबई तेरे नौनिहालों पर अपनी जान न्योछावर करने वाले ये भैया लोग जब अपने घरों की हजार किमी की यात्रा पर चलने लगे तो तू इनके बच्चों के पांव में एक एक जोड़ चप्पल भी न दे पाई !!

मुंबई, तेरे गलियारों में एक शब्द बड़ा गुंजाती है तू, जिससे सी एस आर कहते हैं, कारपोरेट सोशल रिस्पांसबिलिटी। दुखद विषय है कि इस सीएसआर ने भी इन मजदूरों को अनसोशल ही समझा और इनकी सोशल जवाबदारी नहीं ली। कुछ गीत और गाये जाते हैं मुंबई के मंचों पर जिसमें मानवाधिकार, ह्यूमन राइट, मानवता, सामाजिक सुरक्षा कोड, श्रम कानून जैसे शब्द बड़े-बड़े नाटकीय और ईश्वरीय अंदाज में बोले जाते हैं। मुंबई इन बड़े-बड़े शब्दों को बोलते समय अपना मुंह इतना ममतामयी बनाती थी कि पूरे देश को उसकी दयालुता पर विश्वास हो जाता था। आज पता चला कि ये तो छल छलिया के अलावा और कुछ नहीं था। कहना ही होगा कि, मुंबई, तू तो बस ड्रामा करती है और फिल्में बहुत बनाती है। सबको पता है कि तू अब इस मजदूर त्रासदी पर भी दो चार फिल्में बनाएगी, इन फिल्मों में भी मेरा ही उपयोग करेगी, इन फिल्मों की टिकिटें भी मैं ही खरीदूंगा और मेरी इस तिल-तिल कर की गई हत्या पर ताली भी मैं ही बजाऊंगा। नमस्ते, मुंबई ! निष्ठुर मुंबई !! पाषाण मुंबई !!!



# लॉकडाउन से पर्यावरण को हुआ लाभ बरकरार रहे, इसके लिए वर्क फ्रॉम होम बढ़ाया जाये

-अरुण कुमार

पिछले करीब सवा महीने की समीक्षा की जाए तो पता चलता है कि लॉकडाउन के कारण जनता को भले ही परेशानियों का सामना करना पड़ हो, लेकिन पर्यावरण आदि कई मामलों को लेकर लॉकडाउन का सकारात्मक पहलू भी सामने आया है।



समय आ गया है कि केन्द्र और राज्य की सरकार इस बात पर गंभीरता से मंथन करें कि ऐसे कौन-कौन से उपाए किए जाएं जिससे अपनी दिनचर्या या रोजी-रोटी चलाने के लिए लोगों को कम से कम सड़क पर आना पड़े। एक अनुमान के अनुसार देश की करीब 25 से 30 प्रतिशत आबादी को अपना कामकाज निपटाने के लिए सिर्फ इसलिए सड़क पर इधर से उधर दौड़ना पड़ता है क्योंकि उसके पास तकनीकी ज्ञान काफी कम है या नहीं है। यही वजह है जहां कई विकसित और विकाशशील देशों में जो काम लोग घरों में बैठे-बैठे ऑनलाइन निपटा देते हैं, उसी काम को करने के लिए आम भारतीय को सरकारी आफिसों, बैंकों, मेडिकल स्टोर्स, फल-सब्जी और राशन की दुकानों आदि के चक्कर लगाने पड़ते हैं। इसके चलते आम भारतीय को समय, श्रम और पैसा तीनों बर्बाद करना पड़ता है। वहीं सरकार को बेकार में ही कई सुविधाओं की व्यवस्था करनी पड़ जाती है। सड़क पर बेतहाशा दौड़ती गाड़ियों के लिए मंहगा ईंधन आयात करना पड़ता है। सड़क पर भीड़ बढ़ती है, जिसके कारण प्रदूषण बढ़ता है। प्रदूषण बढ़ता है तो इसका विपरीत प्रभाव लोगों के स्वास्थ्य पर पड़ता है, जिसके लिए सरकार को ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं जुटानी पड़ जाती हैं। इन सबको लॉकडाउन से जोड़कर देखा जाए तो यह साफ हो जाता है कि लॉकडाउन के दौरान देश में दिल के मरीजों की संख्या में 75 प्रतिशत तक कमी आ गई। बढ़े प्रदूषण के कारण सांस के मरीजों की संख्या में भी इजाफा होता था, जो इस समय काफी कम दिखाई दे रहा है। इसी तरह से सड़क जनित हादसों में कमी आई है तो राह चलते किसी बात पर लड़ाई-झगड़े और उसके चलते चोटिल या मौत के मुंह में चले जाने वाले लोगों का भी ग्राफ गिरा है। प्रकृति को हुए फायदे की बात की जाए तो कम प्रदूषण के चलते ओजोन परत के जानेलावा छिद्र बंद हो गए हैं। नदियों का जल साफ हो गया है। प्रदूषण रहित वातावरण में पशु-पक्षी खूब आनंदित होकर अठखेलियां कर रहे हैं।

पिछले करीब सवा महीने की समीक्षा की जाए तो पता चलता है कि लॉकडाउन के कारण जनता को भले ही परेशानियों का सामना करना पड़ हो, लेकिन पर्यावरण आदि कई मामलों को लेकर लॉकडाउन का सकारात्मक पहलू भी सामने आया है। पूरी दुनिया में प्रदूषण का स्तर काफी कम देखने को मिल रहा है। हवा लगभग साफ हो गई है। लॉकडाउन के कारण पर्यावरण में आया सकारात्मक बदलाव हमें इस बात का अहसास कराता है कि यदि प्रकृति और उसके संसाधनों का अनुचित दोहन नहीं किया जाए तो हम कई मुसीबतों जैसे बाढ़, सूखे, बढ़ते तापमान आदि से बच सकते हैं तो ग्लेशियरों को पिघलने से भी बचा सकते हैं। कोरोना महामारी ने हमें यह भी समझा दिया है कि यदि हमें पृथ्वी को बचाना है तो उसके संरक्षण के लिए हमें कोई कारगर नीति बनानी ही होगी। पेड़-पौधों, जंगलों और जानवरों को बचाना एवं संरक्षण देना होगा। जीवनदायिनी नदियों को प्राकृतिक तौर पर आगे बढ़ने के लिए संरक्षण दिया जाए, उसमें गिरने वाले नालों और फैक्ट्रियों के गंदे पानी पर रोक लगाई जाए। सिर्फ कानून बनाकर यह काम नहीं हो सकता है, इसके लिए जनता को जागरूक भी करना पड़ेगा।

एक मोटे अनुमान के अनुसार घर का हो या फिर बाहर का वायु प्रदूषण दोनों के कारण पूरी दुनिया में प्रत्येक वर्ष करीब एक करोड़ लोगों की असमय मौत हो जाती है, जिनमें अच्छी-खासी संख्या लगभग 7 प्रतिशत बच्चों की भी होती है। भारत वर्ष में निर्माण कार्यों और औद्योगिक प्रदूषण, भोजन बनाने के लिए इस्तेमाल किए जाने वाले ईंधन तथा वाहनों से निकलने वाले धुएं के कारण भी प्रत्येक वर्ष वायु प्रदूषण का स्तर बढ़ता जा रहा है। बढ़ते प्रदूषण के मामले में विकासशील देशों की स्थिति और इसमें भी भारत की स्थिति काफी दयनीय है। वर्ल्ड एयर क्वालिटी रिपोर्ट-2019 का जो डेटा आईक्यूएआईआर के शोधकर्ताओं ने तैयार किया है, उसके अनुसार 2018 में टॉप-30 प्रदूषित शहरों में

भारत के 22 शहर शामिल थे। 2018 ही क्या, वायु प्रदूषण के सबसे खराब स्तर वाले शहरों की सालाना लिस्ट में भारत के शहर अक्सर टॉप पर रहते हैं। बीते साल जो रिपोर्ट आई थी, उसके अनुसार यूपी का गाजियाबाद इस लिस्ट में पहले नम्बर पर था। टॉप-10 में से 6 और टॉप-30 में कुल 21 शहर भी भारत के हैं। हाँ, लॉकडाउन के बाद जरूर हालात काफी तेजी से बदले हैं।

खैर, बाते आगे बढ़ाई जाए तो विश्व स्वास्थ्य संगठन से जुड़ी रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की 90 फीसदी आबादी प्रदूषित हवा में सांस ले रही है। कुछ समय पहले संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण विशेषज्ञ डेविड बोयड ने भी अपने एक वक्तव्य में कहा था कि करीब छह अरब लोग नियमित रूप से घातक प्रदूषित हवा में सांस ले रहे हैं, जिससे उनका जीवन और स्वास्थ्य जोखिम भरा है। इसके बावजूद इस महामारी पर बहुत कम ध्यान दिया जा रहा है। डेविड बोयड के अनुसार दुनिया में हर घंटे 800 लोग मर रहे हैं, जिनमें से अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं झेलने के कई वर्षों बाद मर रहे हैं। कैंसर, सांस की बीमारियां और दिल के रोगों में प्रदूषित हवा के कारण लगातार वृद्धि हो रही है। वायु प्रदूषण टाइप-2 मधुमेह को भी बढ़ा रहा है। वायु में मौजूद पीएम2.5 कण टाइप-2 मधुमेह के मामलों और मृत्यु को बढ़ाता है। इसे उच्च रक्तचाप के लिए भी जिम्मेदार माना गया है। हमारे देश में वायु प्रदूषण के कारण सांस की बीमारियों, हृदय की बीमारियों, हृदयाघात, फेफड़ों के कैंसर के कारण समय पूर्व मृत्यु की दर बढ़ती जा रही है। पिछले दिनों विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा जारी एक रिपोर्ट में बताया गया था कि भारत में लगातार वाहनों की संख्या बढ़ने के कारण प्रदूषण और सांस से संबंधित विभिन्न बिमारियां पनप रही हैं। संयुक्त राष्ट्र के विशेषज्ञ डेविड बोयड के अनुसार स्वच्छ हवा प्राप्त करना हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार है।

लॉकडाउन के बाद जो भारत की नई तस्वीर

उभर कर सामने आई है, उससे यह संकेत भी मिलते हैं कि भारत के पास पर्यावरण को बचाने के लिए तमाम 'नुस्खे' मौजूद हैं। इन नुस्खों को देश की ज्यादा से ज्यादा आबादी को ऑनलाइन सुविधाओं से जोड़ कर परखा जा सकता है। स्वच्छ हवा सुनिश्चित करने के लिए कुछ प्रयास किए जाने की जरूरत है। इनमें वायु गुणवत्ता एवं मानव स्वास्थ्य पर उसके प्रभावों की निगरानी, वायु प्रदूषण के स्रोतों का आकलन और जन-स्वास्थ्य परामर्शों समेत अन्य सूचनाओं को सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध कराना शामिल है। यह कटु सत्य है कि वायु प्रदूषण का एक बड़ा कारण वाहनों से निकलने वाला जहरीला धुआं है। वायु प्रदूषण पर इस तरह के अध्ययन न केवल वाहनों के माध्यम से होने वाले वायु प्रदूषण पर हमारी आंखें खोलते हैं, बल्कि जरूरत से ज्यादा ऐशो आराम की जिंदगी जीने की लालसा पर भी प्रश्नचिह्न लगाते हैं। वायु प्रदूषण का एक प्रमुख कारण वाहनों से निकलने वाला धुआं है। इसमें कार्बन मोनोऑक्साइड, नाइट्रोजन ऑक्साइड, हाइड्रोकार्बन तथा सस्पेंडेड पार्टिकुलेट मैटर जैसे खतरनाक तत्व एवं गैसों होती हैं जो स्वास्थ्य के लिए बहुत ही हानिकारक हैं। कार्बन मोनोऑक्साइड जब सांस के माध्यम से शरीर के अंदर पहुंचता है तो वहां हीमोग्लोबिन के साथ मिलकर कार्बोक्सीहीमोग्लोबिन नामक तत्व बनाता है। इस तत्व के कारण शरीर में ऑक्सीजन का संचार सुचारू रूप से नहीं हो पाता है। नाइट्रोजन मोनोऑक्साइड एवं नाइट्रोजन डाइऑक्साइड भी कम खतरनाक नहीं हैं। नाइट्रोजन मोनोऑक्साइड, कार्बन मोनोऑक्साइड की तरह ही हीमोग्लोबिन के साथ मिलकर शरीर में ऑक्सीजन की मात्रा घटाता है। वाहनों से निकलने वाला हाइड्रोकार्बन अल्प मात्रा में भी पौधों के लिए हानिकारक है। सस्पेंडेड पार्टिकुलेट मैटर छोटे-छोटे कणों के रूप में विभिन्न स्वास्थ्यगत समस्याएं पैदा करते हैं। ऐसे तत्व हमारे फेफड़ों को नुकसान पहुंचाकर सांस संबंधी रोग उत्पन्न करते हैं। वाहनों से फैलने वाले प्रदूषण से निपटने के लिए जरूरी है कि पब्लिक ट्रांसपोर्ट सिस्टम को बेहतर बनाया जाए, ताकि लोगों की निजी वाहनों के प्रयोग की आदत को कम किया जा सके। वायु प्रदूषण को कम करने के लिए दिल्ली की केजरीवाल सरकार ऑड-ईवन का फार्मूला लेकर आई थी, जो प्रयोग ज्यादा सफल नहीं रहा।

दरअसल, देश की जनता के दिमाग से जब तक यह बात नहीं निकलेगी कि कारों का काफिला बढ़ाना कोई स्ट्रेट्स सिंबल नहीं होता है, तब तक यह समस्या बनी रहेगी। इसी शोथे स्ट्रेट्स सिंबल के कारण तेजी से बढ़ती वाहनों की संख्या हमारे लिए सिरदर्द बनती जा रही है। बहरहाल लॉकडाउन के कारण प्रदूषण का स्तर कम होना हमें एक सकारात्मक संदेश दे रहा है। अगर हम अब भी नहीं जागते हैं तो यह अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारने जैसा होगा। हमें यह समझना होगा कि प्रदूषण कम होने पर ही पृथ्वी बच पाएगी, जब पृथ्वी बचेगी, तभी जीवन बचेगा।

अमेरिकी स्पेस एजेंसी नासा के लेटेस्ट सेटेलाइट डाटा से पता चला है कि इन दिनों उत्तर भारत में वायु प्रदूषण 20 साल में सबसे निचले स्तर पर है। नासा ने इसके लिए वायुमंडल में मौजूद एयरोसॉल की जानकारी हासिल की। फिर ताजा आंकड़े की तुलना 2016 से 2019 के बीच खींची गई तस्वीरों से की। नासा में यूनिवर्सिटीज स्पेस रिसर्च एसोसिएशन (यूएसआरए) के साइंटिस्ट पवन गुप्ता के मुताबिक, लॉकडाउन के कारण वायुमंडल में बड़े पैमाने पर बदलाव देखने को मिला है। इससे पहले कभी उत्तर भारत के ऊपरी क्षेत्र में वायु प्रदूषण का इतना कम स्तर देखने को नहीं मिला।

विश्व स्वास्थ्य संगठन से जुड़ी रिपोर्ट के अनुसार दुनिया की 90 फीसदी आबादी प्रदूषित हवा में सांस ले रही है। कुछ समय पहले संयुक्त राष्ट्र के पर्यावरण विशेषज्ञ डेविड बोयड ने भी अपने एक वक्तव्य में कहा था कि करीब छह अरब लोग नियमित रूप से घातक प्रदूषित हवा में सांस ले रहे हैं, जिससे उनका जीवन और स्वास्थ्य जोखिम भरा है। इसके बावजूद इस महामारी पर बहुत कम ध्यान दिया जा रहा है। डेविड बोयड के अनुसार दुनिया में हर घंटे 800 लोग मर रहे हैं, जिनमें से अनेक स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं झेलने के कई वर्षों बाद मर रहे हैं। कैंसर, सांस की बीमारियां और दिल के रोगों में प्रदूषित हवा के कारण लगातार वृद्धि हो रही है। वायु प्रदूषण टाइप-2 मधुमेह को भी बढ़ा रहा है। वायु में मौजूद पीएम2.5 कण टाइप-2 मधुमेह के मामलों और मृत्यु को बढ़ाता है। इसे उच्च रक्तचाप के लिए भी जिम्मेदार माना गया है। हमारे देश में वायु प्रदूषण के कारण सांस की बीमारियों, हृदय की बीमारियों, हृदयाघात, फेफड़ों के कैंसर के कारण समय पूर्व मृत्यु की दर बढ़ती जा रही है।



मानव जीवन भौतिक, आर्थिक, मानसिक और आध्यात्मिक स्तरों पर बार-बार और आसानी से चोट खाते हुए भी सबक नहीं ले रहा है। उन्नत विज्ञान और तकनीक इन चोटों से हमें बचाने में असमर्थ है। कोरोना महासंकट को झेलते हुए भी इंसान जीवन की इस यथार्थता को समझ नहीं पा रहा है। यही कारण है कि संसार की मोह-माया, सत्ता एवं स्वार्थ के लुभावने इन्द्रजाल में फंसकर अपने सारे क्रिया-कलाप इस प्रकार करता जा रहा हैं, मानो अमरौती खाकर आये हों, अजर-अमर होने का वरदान लेकर आये हों। यदि उन्हें इस बात का ध्यान रहे कि जिन्दगी जटिल से जटिलतर होती जा रही है, मृत्यु प्रतिपल सम्मुख खड़ी है, जीवन किसी भी क्षण विकराल बन सकता है तो अपने कृत्यों एवं कारनामों पर सोचना चाहिए। इसी कोरोना महामारी ने मनुष्य और प्रकृति के बिगड़े संबंधों की ओर फिर ध्यान दिलाया है, मानव से दानव बन रही दुनिया की शक्ति को प्रस्तुति दी है। गत चार सौ वर्ष की महामारियों, महायुद्धों और हालिया दशकों में अंतहीन जिहादी एवं आतंकवादी हमलों ने भी यही दिखाया है। तब एक स्वस्थ, शालीन और सद्भावपूर्ण जीवन के लिए मानवता को क्या करना चाहिए? इस पर विचार करने की जरूरत है। लेकिन सुविधावाद में आदमी आदमी से बिछुड़ गया है। वह जमाना अब स्वप्न की चीज हो गया है, जब हमारी संस्कृति 'वसुधैव कुटुम्बकम्' एवं सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे संतु निरामय का घोष ही नहीं करती थी, उस पर अमल भी करती थी। आज भारत की उसी जीवनशैली को जन-जन की जीवनशैली बनाना होगा।

कोरोना महामारी एक तात्कालिक, वास्तविक और विराट त्रासदी है, एक महाप्रकोप है, जो हमारी आंखों के सामने घटित हो रहा है। विश्व स्वास्थ्य संगठन और दुनिया के स्वास्थ्य विशेषज्ञों का मानना है कि कोरोना महामारी जल्द खत्म होने वाली नहीं है। भले ही हमने अतीत में श्रेष्ठ जीवन जिया और तमाम तरह की उन्नतियां हासिल कीं। भले ही हम मानव इतिहास के सर्वश्रेष्ठ युग के साक्षी बने हैं, लेकिन एक बड़ा सत्य यह भी सामने खड़ा है कि एक कोरोना वायरस के सामने हम निरुपाय हैं, हमारा विज्ञान एवं हमारी तकनीक भी असहाय है। तकनीक एवं वैज्ञानिक उपलब्धियां हर दृष्टि से जीवन को श्रेष्ठ नहीं बना सकतीं। हमें प्रकृति के नियमों का सम्मान करना ही होगा, प्रकृति के दोहन को रोकना ही होगा। मानवता पर जब-जब संकट आया, तब-तब इसके समाधान के लिए दुनिया को भारत की ज्ञान-परंपरा एवं समृद्ध संस्कृति ने रोशनी दिखायी है।

वास्तव में मृत्यु की कल्पना हमें जीवन की गहराइयों में ले जाती है। हमें पता चलता है कि जो सांसों हमें मिली हैं, उनमें से एक भी सांस को व्यर्थ नहीं खोना है। निर्विकार रहकर एक-एक सांस का उपयोग करना है। अपनी 'चदरिया' पर दाग नहीं लगने देना है। उसे ज्यों का त्यों उतार कर रख देना है। लेकिन हमारी चदरिया तो दागों से लहलुहान है। हम देवालय जाते हैं। प्रभु की मूर्ति के आगे क्षण भर के लिए हमारे मन की मलिनता दूर हो जाती है। हमारे विचार पवित्र हो जाते हैं। मैल का आवरण हट जाने पर आत्मा की ज्योति चमकने लगती है। यह तब होता है, जबकि हमारा मुंह प्रभु की ओर होता है, और पीठ दुनिया की ओर। लेकिन जैसे ही हम देवालय से बाहर आते हैं, हमारे मुंह दुनिया की ओर हो जाता है, उद्योगपति उद्योग में, किसान खेती-बाड़ी में, राजनेता राजनीति में, मजदूर मजदूरी में, लेकिन जीवन के अंत में वे पाते हैं कि उनके हाथ कुछ लगा नहीं।

भारत का योग, आयुर्वेद, खानपान, साहित्य, परंपरा, ज्ञान और अनुभव उपयोगी थे। वे अभी तक संग्रहालय की चीज नहीं बने हैं।

## कोरोना संकट ने पूरी दुनिया को जीवनशैली बदलने पर मजबूर कर दिया है

जीवन शैली



वास्तव में मृत्यु की कल्पना हमें जीवन की गहराइयों में ले जाती है। हमें पता चलता है कि जो सांसों हमें मिली हैं, उनमें से एक भी सांस को व्यर्थ नहीं खोना है। निर्विकार रहकर एक-एक सांस का उपयोग करना है। अपनी 'चदरिया' पर दाग नहीं लगने देना है।

आज भी भारत एक मायने में उसी कालखंड का गौरवशाली जीवन अपनी जीवनचर्या में शामिल किए हुए है। ऐसा विश्व की किसी अन्य सभ्यता में नहीं है। भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति, जीवनदर्शन शाश्वत है, त्रैकालिक, सार्वजनीन, सार्वदेशिक है। इसका संपर्क संपूर्ण अस्तित्व और वृहतर चेतना से रहा है। उपनिषद्, जैन आगम इसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं। उनमें मौजूद सत्य एवं तथ्य देश, काल या समाज की सीमाओं से परे सार्वभौमिक प्रतीत होते हैं। उसी की सरल प्रस्तुति गीता में है। मन का तनाव बड़ जाता है। इस तनाव को दूर करने के लिए गीता में 'आहार-विहारस्य' का मार्ग बताया गया है, अर्थात् हमें सात्विक भोजन करना चाहिए और पूरी निद्रा लेनी चाहिए। तामसिक भोजन मनुष्य की वृत्तियों को उत्तेजित करता है और निद्रा का पूरा न होना मन को बेचैन करता है। भोजन का संयम न हो तो शरीर स्वस्थ नहीं रह सकता। भारत आदि काल से विश्व सभ्यता के लिए एक ज्ञान-स्रोत है। लेकिन विडम्बना है कि हम स्वयं ही अपने इस अखूट खजाने को नकार रहे हैं उसकी शक्ति को झुठलाकर आपाधापी में उलझे हैं। यह हमारी जिंदगी की एक ऐसी सच्चाई है, जिसे जानकर भी हम नहीं जानते, जिसे समझ कर भी हम नहीं समझते। अंग्रेजी के विख्यात कवि वर्ड्सवर्थ ने अपनी एक कविता में बड़े पते की बात कही है- "हम दुनिया में इतने डूबे हुए हैं कि प्रकृति से कुछ भी ग्रहण नहीं करते, उस प्रकृति से, जो हमारी अपनी है। निन्यानबे के फेर में, दुनिया के लेन-देन में अपनी सारी जिंदगी गुजार देते हैं।"

संसार में जो धन-जन आदि पदार्थ हैं, उन सबको पाश-रूप जानकर इंसान को बड़ी

सावधानी से, फूंक-फूंककर, पैर रखना चाहिए। जब तक शरीर सशक्त है तब तक उसका उपयोग अधिक-से-अधिक संयम-सादगी एवं अनुशासन से करना चाहिए। सूचनाओं का भंडार दिमाग में भर लेने से जीवन व्यस्त ही नहीं, अस्तव्यस्त हो रहा है। सूचना प्रौद्योगिकी की उपयोगिता के साथ इस सत्य के प्रति भी सजग होना आवश्यक है कि हमारे संपूर्ण कर्मों का सामंजस्य प्रकृति और मूल सत्ता के साथ होना चाहिए। मनुष्य का स्वास्थ्य भी इस सामंजस्य पर निर्भर है। योग और आयुर्वेद हमारी आंतरिक ऊर्जा को संतुलित करते हैं। रोगों से बचने, लड़ने में शक्ति देते हैं, रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाते हैं। दुनिया के शक्तिशाली कहे जाने वाले राष्ट्र के लोगों की सहज रोग-निवारक क्षमता यानी इम्यूनिटी कम हुई है। जबकि शरीर की सुदृढ़ता के लिए आसन एवं दीर्घायु के लिए प्राणायाम को वैज्ञानिक ढंग से ऋषियों ने अनुभव के आधार पर दिया है। प्राणायाम, कायोत्सर्ग, अनुप्रेक्षाएं करने वाले इंसान कोरोना वायरस के गहरे अटैक से मुक्त रहेंगे या उससे बचकर निकल आएंगे। ध्यान-पद्धति कोई भी हो, लेकिन कोरोना महासंकट-निवारण के लिए आत्म-शोधन अत्यावश्यक है। जिस घट में विष भरा हो, उसमें कितना भी अमृत डालिए वह विषाक्त हुए बिना नहीं रहेगा। गंगा का उद्गम गोमुख पवित्र है तो उससे जो जलधारा प्रवाहित होती है, वह भी पवित्र ही होती है। उसके जल को कितने भी दिन रख लीजिए, कभी दूषित नहीं होगा। यही बात मानव के शरीर, मन और बुद्धि के साथ है। इनके शुद्ध हुए बिना कोरोना महाव्याधि दूर करने और निरोगी एवं संकटमुक्त जीवन को पाने के उपाय कभी सफल नहीं होंगे। इसी से कहा गया है कि मन, वचन और काय का मैल

जब तक दूर नहीं होगा, जीवन के उत्कर्ष का स्वप्न दिवा-स्वप्न बना रहेगा।

आत्म-शोधन के बिना आत्म-नियंत्रण संभव नहीं हो सकता है। एक दार्शनिक का कथन है "आदत को बदलने के लिए, स्वभाव को बदलने के लिए, कर्तव्य के पूरे रूप को बदलने के लिए, आत्म-शोधन आवश्यक है। यह कोरा दिशान्तरण नहीं है। मार्गान्तरीकरण नहीं है, वरन् समस्त रूपान्तरीकरण है। मनोविज्ञान का मार्गान्तरीकरण एक मौलिक वृत्ति के मार्ग को बदलने की प्रक्रिया है, उसको दूसरी दिशा में ले जाने की पद्धति है। शाकाहार को अपनाने वाले एवं सात्विक जीवनशैली जीने वालों के लिये भी कोरोना संकट से बाहर आना अन्यों की तुलना में ज्यादा आसान है। इस तरह की जीवनशैली मानवता में किसी भी तरह का भेदभाव नहीं करती। जो चाहे इसकी अनूठी शक्ति आजमा सकते हैं। छूत के रोग रोकने के लिए वैक्सीन जरूरी है, किंतु संपूर्ण स्वास्थ्य के लिए संतुलित जीवन, संतुलित आहार-व्यवहार, अच्छी आदतें, सकारात्मक सोच व प्रकृति में स्थित मूल प्राण से स्वयं को जो?ना आवश्यक है।

लोगों का जीवन स्वस्थ हो, इसी से कोरोना कहर को रोका जा सकता है। इसके लिये भारतीय जीवनशैली कोरोना बाद के युग में एक मूल्यवान सबक हो सकता है, निरामय जीवनशैली का आधार हो सकता है। हमें अपने आंतरिक और बाह्य पर्यावरण के बीच संतुलन पुनः बनाना होगा, जो सदियों से बहुत से समाजों में टूटा हुआ सा रहा है। वर्तमान समय में इस समूची दुनिया को, हमारी मानवता को एक नई जीवनशैली, भारतीय मूल्यों वाली सभ्यता-संस्कृति की

वास्तव में मृत्यु की कल्पना हमें जीवन की गहराइयों में ले जाती है। हमें पता चलता है कि जो सांसों हमें मिली हैं, उनमें से एक भी सांस को व्यर्थ नहीं खोना है। निर्विकार रहकर एक-एक सांस का उपयोग करना है। अपनी 'चदरिया' पर दाग नहीं लगने देना है। उसे ज्यों का त्यों उतार कर रख देना है। लेकिन हमारी चदरिया तो दागों से लहलुहान है। हम देवालय जाते हैं। प्रभु की मूर्ति के आगे क्षण भर के लिए हमारे मन की मलिनता दूर हो जाती है। हमारे विचार पवित्र हो जाते हैं। मैल का आवरण हट जाने पर आत्मा की ज्योति चमकने लगती है। यह तब होता है, जबकि हमारा मुंह प्रभु की ओर होता है, और पीठ दुनिया की ओर। लेकिन जैसे ही हम देवालय से बाहर आते हैं, हमारे मुंह दुनिया की ओर हो जाता है, उद्योगपति उद्योग में, किसान खेती-बाड़ी में, राजनेता राजनीति में, मजदूर मजदूरी में, लेकिन जीवन के अंत में वे पाते हैं कि उनके हाथ कुछ लगा नहीं।

आवश्यकता है। योग, आयुर्वेद एवं भारतीय जीवनमूल्यों को निजता से सार्वभौमिकता, सार्वदेशिकता या समग्रता की ओर ले चलना होगा। कोरोना रूपी मृत्यु या संकट से अधिकांश व्यक्ति अत्यंत भयभीत हैं। वे भूले हुए हैं कि मृत्यु शत्रु नहीं, परम मित्र है। वह हमारे सिर पर बंधी एक घंटी है, जो हर घड़ी चेतावनी दे रही है- सावधान रहो। एक-एक क्षण का उपयोग उस साधना में करो, जो मानव-जीवन को कृतार्थ करे, कोरोना मुक्ति की दिशा में अग्रसर करे। वह यह भी कहती है कि इस धरा पर मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी है और उसे जो जीवन मिला है, वह दुर्लभ है और वह कोरोना जैसे अनेक संकटों से पार पाने में सक्षम है।



( कहानी- फणीश्वरनाथ रेणु)

## लाल पान की बेगम



क्यों बिरजू की माँ, नाच देखने नहीं जाएगी क्या?

बिरजू की माँ शकरकंद उबाल कर बैठी मन-ही-मन कुढ़ रही थी अपने आँगन में। सात साल का लड़का बिरजू शकरकंद के बदले तमाचे खा कर आँगन में लोट-पोट कर सारी देह में मिट्टी मल रहा था। चंपिया के सिर भी चुड़ैल मँडरा रही है... आधे-आँगन धूप रहते जो गई है सहुआन की दुकान छोवा-गुड़ लाने, सो अभी तक नहीं लौटी, दीया-बाती की बेला हो गई। आए आज लौटके जरा! बागड़ बकरे की देह में कुकुरमाछी लगी थी, इसलिए बेचारा बागड़ रह-रह कर कूद-फाँद कर रहा था। बिरजू की माँ बागड़ पर मन का गुस्सा उतारने का बहाना ढूँढ़ कर निकाल चुकी थी। ...पिछवाड़े की मिर्च की फूली गाछ! बागड़ के सिवा और किसने कलेवा किया होगा! बागड़ को मारने के लिए वह मिट्टी का छोटा ढेला उठा चुकी थी, कि पड़ोसिन मखनी फुआ की पुकार सुनाई पड़ी - ‘क्यों बिरजू की माँ, नाच देखने नहीं जाएगी क्या?’

‘बिरजू की माँ के आगे नाथ और पीछे पगहिया न हो तब न, फुआ!’

गरम गुस्से में बुझी नुकीली बात फुआ की देह में धँस गई और बिरजू के माँ ने हाथ के ढेले को पास ही फेंक दिया -बेचारे बागड़ को कुकुरमाछी परेशान कर रही है। आ-हा, आय... आय! हर-र-र! आय-आय!

बिरजू ने लेटे-ही-लेटे बागड़ को एक डंडा लगा दिया। बिरजू की माँ की इच्छा हुई कि जा कर उसी डंडे से बिरजू का भूत भगा दे, किंतु नीम के पास खड़ी पनभरनियों की खिलखिलाहट सुन कर रुक गई। बोली, ‘ठहर, तेरे बप्पा ने बड़ा हथछुट्टा बना दिया है तुझे! बड़ा हाथ चलता है लोगों पर। ठहर!’

मखनी फुआ नीम के पास झुकी कमर से घड़ा उतार कर पानी भर कर लौटती पनभरनियों में बिरजू की माँ की बहकी हुई बात का इंसाफ करा रही थी -‘जरा देखो तो इस बिरजू की माँ को! चार मन पाट (जूट)का

पैसा क्या हुआ है, धरती पर पाँव ही नहीं पड़ते! निसाफ करो! खुद अपने मुँह से आठ दिन पहले से ही गाँव की गली-गली में बोलती फिरी है, ‘हाँ, इस बार बिरजू के बप्पा ने कहा है, बैलगाड़ी पर बिठा कर बलरामपुर का नाच दिखा लाऊँगा। बैल अब अपने घर है, तो हजार गाड़ी मँगनी मिल जाएँगी।’ सो मैंने अभी टोक दिया, नाच देखनेवाली सब तो औन-पौन कर तैयार हो रही हैं, रसोई-पानी कर रहे हैं। मेरे मुँह में आग लगे, क्यों मैं टोकने गई! सुनती हो, क्या जवाब दिया बिरजू की माँ ने?’

मखनी फुआ ने अपने पोपले मुँह के होंठों को एक ओर मोड़ कर ऐठती हुई बोली निकाली - ‘अ-र्र-हाँ-हाँ! बि-र-र-जजू की मै...या के आगे नाथ और-र पीछे पगहिया ना हो, तब ना-आ-आ !’

जंगी की पुतोहू बिरजू की माँ से नहीं डरती। वह जरा गला खेल कर ही कहती है, ‘फुआ-आ! सरबे सितलमिटी (सर्वे सेटलमेंट) के हाकिम के बासा पर फूलछाप किनारीवाली साड़ी पहन के तू भी भटा की भेंटी चढ़ाती तो तुम्हारे नाम से भी दु-तीन बीघा धनहर जमीन का पर्चा कट जाता! फिर तुम्हारे घर भी आज दस मन सोनाबंग पाट होता, जोड़ा बैल खरीदता! फिर आगे नाथ और पीछे सैकड़ो पगहिया झूलती!’

जंगी की पुतोहू मुँहजोर है। रेलवे स्टेशन के पास की लड़की है। तीन ही महीने हुए, गौने की नई बहू हो कर आई है और सारे कुर्माटोली की सभी झगड़ालू सासों से एकाध मोरचा ले चुकी है। उसका ससुर जंगी दागी चोर है, सी-किलासी है। उसका खसम रंगी कुर्माटोली का नामी लठैत। इसीलिए हमेशा सींग खुजाती फिरती जंगी की पुतोहू!

बिरजू की माँ के आँगन में जंगी की पुतोहू की गला-खोल बोली गुलेल की गोलियों की तरह दनदनाती हुई आई थी। बिरजू के माँ ने एक तीखा जवाब खोज कर निकाला, लेकिन मन मसोस कर रह गई। ...गोबर की ढेरी में कौन ढेला फेंके!

जीभ के झाल को गले में उतार कर बिरजू की माँ ने अपनी बेटी चंपिया को आवाज दी -‘अरी चंपिया-या-या, आज लौटे तो तेरी मूड़ी मरोड़ कर चूल्हे में झोंकती हूँ! दिन-दिन बेचाल होती जाती है! ...गाँव में तो अब ठेठर-बैसकोप का गीत गानेवाली पतुरिया-पुतोहू सब आने लगी हैं। कहीं बैठके-‘बाजे न मुरलिया’ सीख रही होगी ह-र-जा-ई-ई! अरी चंपिया-या-या!’

जंगी की पुतोहू ने बिरजू की माँ की बोली का स्वाद ले कर कमर पर घड़े को सँभाला और मटक कर बोली, ‘चल दिदिया, चल! इस मुहल्ले में लाल पान की बेगम बसती है! नहीं जानती, दोपहर-दिन और चौपहर-रात बिजली की बत्ती भक्-भक् कर जलती है!’

भक्भक् बिजली-बत्ती की बात सुन कर न जाने क्यों सभी खिलखिला कर हँस पड़ी। फुआ की टूटी हुई दंत-पंक्तियों के बीच से एक मीठी गाली निकली - ‘शैतान की नानी!’

बिरजू की माँ की आँखों पर मानो किसी ने तेज टाच की रोशनी डाल कर चौंधिया दिया। ...भक्भक् बिजली-बत्ती! तीन साल पहले सर्वे कैंप के बाद गाँव की जलनडाही औरतों ने एक कहानी गढ़ के फैलाई थी, चंपिया की माँ के आँगन में रात-भर बिजली-बत्ती भुकभुकाती थी! चंपिया की माँ के आँगन में नाकवाले जूते की छाप घोड़े की टाप की तरह। ...जलो, जलो! और जलो! चंपिया की माँ के आँगन में चाँदी-जैसे पाट सूखते देख कर जलनेवाली सब औरतें खलिहान पर सोनोली धान के बोझों को देख कर बँगन का भुर्ता हो जाएँगी।

मिट्टी के बरतन से टपकते हुए छोवा-गुड़ को उँगलियों से चाटती हुई चंपिया आई और माँ के तमाचे खा कर चीख पड़ी - ‘मुझे क्यों मारती है-ए-ए-ए! सहुआइन जल्दी से सौदा नहीं देती है-एँ-एँ-एँ-एँ!’

‘सहुआइन जल्दी सौदा नहीं देती की नानी! एक सहुआइन की दुकान पर मोती झरते हैं, जो जड़ गाड़ कर बैठी हुई थी! बोल, गले पर

लात दे कर कल्ला तोड़ दूँगी हरजाई, जो फिर कभी ‘बाजे न मुरलिया’ गाते सुना! चाल सीखने जाती है टीशन की छोकरियों से!’

बिरजू के माँ ने चुप हो कर अपनी आवाज अंदाजी कि उसकी बात जंगी के झोंपड़े तक साफ-साफ पहुँच गई होगी।

बिरजू बीती हुई बातों को भूल कर उठ खड़ा हुआ था और धूल झाड़ते हुए बरतन से टपकते गुड़ को ललचाई निगाह से देखने लगा था। ...दीदी के साथ वह भी दुकान जाता तो दीदी उसे भी गुड़ चटाती, जरूर! वह शकरकंद के लोभ में रहा और माँगने पर माँ ने शकरकंद के बदले...

‘ए मैया, एक अँगुली गुड़ दे दे बिरजू ने तलहथी फैलाई - दे ना मैया, एक रत्ती भर!’

‘एक रत्ती क्यों, उठाके बरतन को फेंक आती हूँ पिछवाड़े में, जाके चाटना! नहीं बनेगी मीठी रोटी! ...मीठी रोटी खाने का मुँह होता है बिरजू की माँ ने उबले शकरकंद का सूप रोती हुई चंपिया के सामने रखते हुए कहा, बैठके छिलके उतार, नहीं तो अभी...!’

दस साल की चंपिया जानती है, शकरकंद छीलते समय कम-से-कम बारह बार माँ उसे बाल पकड़ कर झकझोरेगी, छोटी-छोटी खोट निकाल कर गालियाँ देगी - ‘पाँव फैलाके क्यों बैठी है उस तरह, बेलल्जी!’ चंपिया माँ के गुस्से को जानती है।

बिरजू ने इस मौके पर थोड़ी-सी खुशामद करके देखा - ‘मैया, मैं भी बैठ कर शकरकंद छीलूँ?’

‘नहीं?’ माँ ने झिड़की दी, %एक शकरकंद छीलेगा और तीन पेट में! जाके सिद्ध की बहू से कहो, एक घंटे के लिए कड़ाही माँग कर ले गई तो फिर लौटाने का नाम नहीं। जा जल्दी!’

मुँह लटका कर आँगन से निकलते-निकलते बिरजू ने शकरकंद और गुड़ पर निगाहें दौड़ाई।

मखनी फुआ नीम के पास झुकी कमर से घड़ा उतार कर पानी भर कर लौटती पनभरनियों में बिरजू की माँ की बहकी हुई बात का इंसाफ करा रही थी -‘जरा देखो तो इस बिरजू की माँ को! चार मन पाट (जूट)का पैसा ज्या हुआ है, धरती पर पाँव ही नहीं पड़ते! निसाफ करो! खुद अपने मुँह से आठ दिन पहले से ही गाँव की गली-गली में बोलती फिरी है, ‘हाँ, इस बार बिरजू के बप्पा ने कहा है, बैलगाड़ी पर बिठा कर बलरामपुर का नाच दिखा लाऊँगा। बैल अब अपने घर है, तो हजार गाड़ी मँगनी मिल जाएँगी।’ सो मैंने अभी टोक दिया, नाच देखनेवाली सब तो औन-पौन कर तैयार हो रही है, रसोई-पानी कर रहे हैं। मेरे मुँह में आग लगे, ज्यों मैं टोकने गई! सुनती हो, ज्या जवाब दिया बिरजू की माँ ने?’



चंपिया ने अपने झबरे केश की ओट से माँ की ओर देखा और नजर बचा कर चुपके से बिरजू की ओर एक शकरकंद फेंक दिया। ...बिरजू भागा।

‘सूरज भगवान डूब गए। दीया-बत्ती की बेला हो गई। अभी तक गाड़ी...

‘चंपिया बीच में ही बोल उठी – कोयरीटोले में किसी ने गाड़ी नहीं दी मैया! बप्पा बोले, माँ से कहना सब ठीक-ठाक करके तैयार रहें। मलदहियाटोली के मियाँजान की गाड़ी लाने जा रहा हूँ।

सुनते ही बिरजू की माँ का चेहरा उतर गया। लगा, छाते की कमानी उतर गई घोड़े से अचानक। कोयरीटोले में किसी ने गाड़ी मँगनी नहीं दी! तब मिल चुकी गाड़ी! जब अपने गाँव के लोगों की आँख में पानी नहीं तो मलदहियाटोली के मियाँजान की गाड़ी का क्या भरोसा! न तीन में न तेरह में! क्या होगा शकरकंद छील कर! रख दे उठा के! ...यह मर्द नाच दिखाएगा। बैलगाड़ी पर चढ़ कर नाच दिखाने ले जाएगा! चढ़ चुकी बैलगाड़ी पर, देख चुकी जी-भर नाच... पैदल जानेवाली सब पहुँच कर पुरानी हो चुकी होंगी।

बिरजू छोटी कड़ाही सिर पर औंधा कर वापस आया-देख दिदिया, मलेटरी टोपी! इस पर दस लाठी मारने पर भी कुछ नहीं होता।

चंपिया चुपचाप बैठी रही, कुछ बोली नहीं, जरा-सी मुस्कराई भी नहीं। बिरजू ने समझ लिया, मैया का गुस्सा अभी उतरा नहीं है पूरे तौर से।

मढ़ैया के अंदर से बागड़ को बाहर भगाती हुई बिरजू की माँ बड़बड़ाइ-कल ही पँचकौड़ी कसाई के हवाले करती हूँ राकस तुझे! हर चीज में मुँह लगाएगा। चंपिया, बाँध दे बागड़ को। खोल दे गले की घंटी! हमेशा टुनुर-टुनुर! मुझे जरा नहीं सुहाता है!

‘टुनुर-टुनुर’ सुनते ही बिरजू को सड़क से जाती हुई बैलगाड़ियों की याद हो आई – ‘अभी बबुआनटोले की गाड़ियाँ नाच देखने जा रही थीं... झुनुर-झुनुर बैलों की झुमकी, तुमने सु...’

बेसी बक-बक मत करो!’ बागड़ के गले से झुमकी खोलती बोली चंपिया।

‘चंपिया, डाल दे चूल्हे में पानी! बप्पा आवे तो कहना कि अपने उड़नजहाज पर चढ़ कर नाच देख आएँ! मुझे नाच देखने का सौख नहीं! ...मुझे जगैयो मत कोई! मेरा माथा दुख रहा है।’

मढ़ैया के ओसारे पर बिरजू ने फिसफिसा के पूछा, ‘क्यों दिदिया, नाच में उड़नजहाज भी उड़गा?’

चटाई पर कथरी ओढ़ कर बैठती हुई चंपिया ने बिरजू को चुपचाप अपने पास बैठने का इशारा किया, मुफ्त में मार खाएगा बेचारा!

बिरजू ने बहन की कथरी में हिस्सा बाँटते हुए चुक्री-मुक्की लगाई। जाड़े के समय इस तरह घुटने पर टुड्डी रख कर चुक्री-मिक्की लगाना सीख चुका है वह। उसने चंपिया के कान के पास मुँह ले जा कर कहा, ‘हम लोग नाच देखने नहीं जाएँगे? ...गाँव में एक पंछी भी नहीं है। सब चले गए।’

चंपिया को तिल-भर भी भरोसा नहीं। संझा तारा डूब रहा है। बप्पा अभी तक गाड़ी ले कर नहीं लौटे। एक महीना पहले से ही मैया कहती थी, बलरामपुर के नाच के दिन मीठी रोटी बनेगी, चंपिया छींट की साड़ी पहनेगी, बिरजू पैंट पहनेगा, बैलगाड़ी पर चढ़ कर-

चंपिया की भीगी पलकों पर एक बूँद आँसू आ गया।

बिरजू का भी दिल भर आया। उसने मन-ही-मन में इमली पर रहनेवाले जिनबाबा को एक बैंगन कबूला, गाछ का सबसे पहला बैंगन, उसने खुद जिस पौधे को रोपा है! ...जल्दी से गाड़ी ले कर बप्पा को भेज दो, जिनबाबा!

मढ़ैया के अंदर बिरजू की माँ चटाई पर पड़ी करवटें ले रही थी। उँह, पहले से किसी बात का मनसूबा नहीं बाँधना चाहिए किसी को! भगवान ने मनसूबा तोड़ दिया। उसको सबसे पहले भगवान से पूछना है, यह किस चूक का फल दे रहे हो भोला बाबा! अपने जानते उसने किसी देवता-पितर की मान-मनौती बाकी नहीं रखी। सर्वे के समय जमीन के लिए जितनी मनौतियाँ की थीं... ठीक ही तो! महाबीर जी का रोट तो बाकी ही है। हाय रे दैव!... भूल-चूक माफ करो महाबीर बाबा! मनौती दूनी करके चढ़ाएंगी बिरजू की माँ!...

बिरजू की माँ के मन में रह-रह कर जंगी की पुतोहू की बातें चुभती हैं, भक्भक् बिजली-बत्ती!... चोरी-चमारी करनेवाली की बेटी-पुतोहू जलेगी नहीं! पाँच बीघा जमीन क्या हासिल की है बिरजू के बप्पा ने, गाँव की भाईखोंकियों की आँखों में किरकिरी पड़ गई है। खेत में पाट लगा देख कर गाँव के लोगों की छाती फटने लगी, धरती फोड़ कर पाट लगा है, बैसाखी बादलों की तरह उमड़ते आ रहे हैं पाट के पौधे! तो अलान, तो फलान! इतनी आँखों की धार भला फसल सहे! जहाँ पंद्रह मन पाट होना चाहिए, सिर्फ दस मन पाट काँटा पर तौल के ओजन हुआ भगत के यहाँ!...

इसमें जलने की क्या बात है भला!... बिरजू के बप्पा ने तो पहले ही कुर्माटोली के एक-एक आदमी को समझा के कहा, ‘जिंदगी-भर मजदूरी करते रह जाओगे। सर्वे का समय हो रहा है, लाठी कड़ी करो तो दो-चार बीघे जमीन हासिल कर सकते हो।’ सो गाँव की किसी पुतखौकी का भतार सर्वे के समय बाबूसाहेब के खिलाफ खाँसा भी नहीं!... बिरजू के बप्पा को कम सहना पड़ा है! बाबूसाहेब गुस्से से सरकस नाच के बाघ की तरह हुमड़ते रह गए। उनका बड़ा बेटा घर में आग लगाने की धमकी देकर गया!... आखिर बाबूसाहेब ने अपने सबसे छोटे लड़के को भेजा। बिरजू की माँ को ‘मौसी’ कहके पुकारा – ‘यह जमीन बाबू जी ने मेरे नाम से खरीदी थी। मेरी पढ़ाई-लिखाई उसी जमीन की उपज से चलती है।’ ...और भी कितनी बातें। खूब मोहना जानता है उत्ता जरा-सा लड़का। जमींदार का बेटा है कि...

‘चंपिया, बिरजू सो गया क्या? यहाँ आ जा बिरजू, अंदर। तू भी आ जा, चंपिया!... भला आदमी आए तो एक बार आज!’

बिरजू के साथ चंपिया अंदर चली गई।

‘ढिबरी बुझा दे!... बप्पा बुलाएँ तो जवाब मत देना। खपच्ची गिरा दे।’

भला आदमी रे, भला आदमी! मुँह देखो जरा इस मर्द का!... बिरजू की माँ दिन-रात मंझा न देती रहती तो ले चुके थे जमीन! रोज आ कर माथा पकड़ के बैठ जाएँ, %मुझे जमीन नहीं लेनी है बिरजू की माँ, मजूरी ही

## सेन्सर टाइम्स

अच्छी।’...जवाब देती थी बिरजू की माँ खूब सोच-समझके, ‘छोड़ दो, जब तुम्हारा कलेजा ही स्थिर नहीं होता है तो क्या होगा? जोर-जमीन जोर के, नहीं तो किसी और के!...’

बिरजू के बाप पर बहुत तेजी से गुस्सा चढ़ता है। चढ़ता ही जाता है। ...बिरजू की माँ का भाग ही खराब है, जो ऐसा गोबरगणेश घरवाला उसे मिला। कौन-सा सौख-मौज दिया है उसके मर्द ने? कोल्हू के बैल की तरह खट कर सारी उम्र काट दी इसके यहाँ, कभी एक पैसे की जलेबी भी ला कर दी है उसके खसम ने! ...पाट का दाम भगत के यहाँ से ले कर बाहर-ही-बाहर बैल-हट्टा चले गए। बिरजू की माँ को एक बार नमरी लोट देखने भी नहीं दिया आँख से। ...बैल खरीद लाए। उसी दिन से गाँव में ढिंढोरा पीटने लगे, बिरजू की माँ इस बार बैलगाड़ी पर चढ़ कर जाएगी नाच देखने! ...दूसरे की गाड़ी के भरोसे नाच दिखाएगा!...

अंत में उसे अपने-आप पर क्रोध हो आया। वह खुद भी कुछ कम नहीं! उसकी जीभ में आग लगे! बैलगाड़ी पर चढ़ कर नाच देखने की लालसा किसी कुसमय में उसके मुँह से निकली थी, भगवान जानें! फिर आज सुबह से दोपहर तक, किसी-न-किसी बहाने उसने अठारह बार बैलगाड़ी पर नाच देखने की चर्चा छेड़ी है। ...लो, खूब देखो नाच! कथरी



के नीचे दुशाले का सपना! ...कल भोरे पानी भरने के लिए जब जाएंगी, पतली जीभवाली पतुरिया सब हँसती आएँगी, हँसती जाएँगी। ...सभी जलते हैं उससे, हाँ भगवान, दाढ़ीजार भी! दो बच्चों की माँ हो कर भी वह जस-की-तस है। उसका घरवाला उसकी बात में रहता है।

वह बालों में गरी का तेल डालती है। उसकी अपनी जमीन है। है किसी के पास एक घूर जमीन भी अपने इस गाँव में! जलेंगे नहीं, तीन बीघे में धान लगा हुआ है, अगहनी। लोगों की बिखदीठ से बचे, तब तो!

बाहर बैलों की घंटियाँ सुनाई पड़ें। तीनों सतर्क हो गए। उत्कर्ण होकर सुनते रहे।

‘अपने ही बैलों की घंटी है, क्यों री चंपिया?’

चंपिया और बिरजू ने प्रायः एक ही साथ कहा, ‘हूँ-ऊँ-ऊँ!’

‘चुप बिरजू की माँ ने फिसफिसा कर कहा, शायद गाड़ी भी है, घड़घड़ाती है न?’

‘हूँ-ऊँ-ऊँ!’ दोनों ने फिर हुँकारी भरी।

‘चुप! गाड़ी नहीं है। तू चुपके से टट्टी में छेद करके देख तो आ चंपी! भागके आ, चुपके-चुपके।’

चंपिया बिछ्छी की तरह हौले-हौले पाँव से टट्टी के छेद से झाँक आई – ‘हाँ मैया, गाड़ी भी है!’

बिरजू हड़बड़ा कर उठ बैठा। उसकी माँ ने उसका हाथ पकड़ कर सुला दिया – ‘बोले मत!’

चंपिया भी गुदड़ी के नीचे घुस गई।

बाहर बैलगाड़ी खोलने की आवाज हुई। बिरजू के बाप ने बैलों को जोर से डाँटा – ‘हाँ-हाँ! आ गए घर! घर आने के लिए छाती फटी जाती थी!’

बिरजू की माँ ताड़ गई, जरूर मलदहियाटोली में गाँजे की चिलम चढ़ रही थी, आवाज तो बड़ी खनखनाती हुई निकल रही है।

‘चंपिया-ह!’ बाहर से पुकार कर कहा उसके बाप ने, ‘बैलों को घास दे दे, चंपिया-ह!’

अंदर से कोई जवाब नहीं आया। चंपिया के बाप ने आँगन में आ कर देखा तो न रोशनी, न चिराग, न चूल्हे में आग। ...बात क्या है! नाच देखने, उतावली हो कर, पैदल ही चली गई क्या...!

बिरजू के गले में खसखसाहट हुई और उसने रोकने की पूरी कोशिश भी की, लेकिन खाँसी जब शुरू हुई तो पूरे पाँच मिनट तक वह खाँसता रहा।

‘बिरजू! बेटा बिर जमोहन!’ बिरजू के बाप ने पुचकार कर बुलाया, मैया गुस्से के मारे सो गई क्या? ...अरे अभी तो लोग जा ही रहे हैं।’

बिरजू की माँ के मन में आया कि कस कर जवाब दे, नहीं देखना है नाच! लौटा दो गाड़ी!

‘चंपिया-ह! उठती क्यों नहीं? ले, धान

की पँचसीस रख दे। धान की बालियों का छोटा झब्बा झोंपड़े के ओसरे पर रख कर उसने कहा, ‘दीया बालो!’

बिरजू की माँ उठ कर ओसारे पर आई – ‘डेढ़ पहर रात को गाड़ी लाने की क्या जरूरत थी? नाच तो अब खत्म हो रहा होगा।’

ढिबरी की रोशनी में धान की बालियों का रंग देखते ही बिरजू की माँ के मन का सब मैल दूर हो गया। ...धानी रंग उसकी आँखों से उतर कर रोम-रोम में घुल गया।

‘नाच अभी शुरू भी नहीं हुआ होगा। अभी-अभी बलमपुर के बाबू की संपनी गाड़ी मोहनपुर होटिल-बँगला से हाकिम साहब को लाने गई है। इस साल आखिरी नाच है!... पँचसीस टट्टी में खोंस दे, अपने खेत का है।’

‘अपने खेत का? हुलसती हुई बिरजू की माँ ने पूछा, पक गये धान?’

‘नहीं, दस दिन में अगहन चढ़ते-चढ़ते लाल हो कर झुक जाएँगी सारे खेत की बालियाँ! ...मलदहियाटोली पर जा रहा था, अपने खेत में धान देख कर आँखें जुड़ा गई। सच कहता हूँ, पँचसीस तोड़ते समय उँगलियाँ काँप रही थीं मेरी!’

बिरजू ने धान की एक बाली से एक धान ले कर मुँह में डाल लिया और उसकी माँ ने एक हल्की डाँट दी – ‘कैसा लुक्ड़ है तू रे!

...इन दुश्मनों के मारे कोई नेम-धरम बचे!’

‘क्या हुआ, डाँटती क्यों है?’

‘नवान्न के पहले ही नया धान जुटा दिया, देखते नहीं?’

‘अरे,इन लोगों का सब कुछ माफ है। चिरई-चुरमुन हैं यह लोग! दोनों के मुँह में नवान्न के पहले नया अन्न न पड़े?’

इसके बाद चंपिया ने भी धान की बाली से दो धान लेकर दाँतों-तले दबाए – ‘ओ मैया! इतना मीठा चावल!’

‘और गमकता भी है न दिदिया?’ बिरजू ने फिर मुँह में धान लिया।

‘रोटी-पोटी तैयार कर चुकी क्या?’ बिरजू के बाप ने मुस्कराकर पूछा।

‘नहीं!’ मान-भरे सुर में बोली बिरजू की माँ, ‘जाने का ठीक-ठिकाना नहीं... और रोटी बनाती!’

‘वाह! खूब हो तुम लोग!...जिसके पास बैल है, उसे गाड़ी मँगनी नहीं मिलेगी भला? गाड़ीवालो को भी कभी बैल की जरूरत होगी। ...पूछूँगा तब कोयरीटोलावालों से! ...ले, जल्दी से रोटी बना ले।’

‘देर नहीं होगी!’

‘अरे, टोकरी भर रोटी तो तू पलक मारते बना देती है, पाँच रोटियाँ बनाने में कितनी देर लगेगी!’

अब बिरजू की माँ के होंठों पर मुस्कराहट खुल कर खिलने लगी। उसने नजर बचा कर देखा, बिरजू का बप्पा उसकी ओर एकटक निहार रहा है। ...चंपिया और बिरजू न होते तो मन की बात हँस कर खोलने में देर न लगती। चंपिया और बिरजू ने एक-दूसरे को देखा और खुशी से उनके चेहरे जगमगा उठे – ‘मैया बेकार गुस्सा हो रही थी न!’

‘चंपी! जरा घैलसार में खड़ी हो कर मखनी फुआ को आवाज दे तो!’

‘ऐ फू-आ-आ! सुनती हो फूआ-आ! मैया बुला रही है!’

फुआ ने कोई जवाब नहीं दिया, किंतु उसकी बड़बड़ाहट स्पष्ट सुनाई पड़ी – ‘हाँ! अब फुआ को क्यों गुहारती है? सारे टोले में बस एक फुआ ही तो बिना नाथ-पगहियावाली है।’

‘अरी फुआ!’ बिरजू की माँ ने हँस कर जवाब दिया, ‘उस समय बुरा मान गई थी क्या? नाथ-पगहियावाले को आ कर देखो, दोपहर रात में गाड़ी लेकर आया है! आ जाओ फुआ, मैं मीठी रोटी पकाना नहीं जानती।’

फुआ काँखती-खाँसती आई-‘इसी के घड़ी-पहर दिन रहते ही पूछ रही थी कि नाच देखने जाएंगी क्या? कहती, तो मैं पहले से ही अपनी अँगठी यहाँ सुलगा जाती।’

बिरजू की माँ ने फुआ को अँगठी दिखला दी और कहा, ‘घर में अनाज-दाना वगैरह तो कुछ है नहीं। एक बागड़ है और कुछ बरतन-बासन, सो रात-भर के लिए यहाँ तंबाकू रख जाती हूँ। अपना हुक्का ले आई हो न फुआ?’

फुआ को तंबाकू मिल जाए, तो रात-भर क्या, पाँच रात बैठ कर जाग सकती है। फुआ ने अँधेरे में टटोल कर तंबाकू का अंदाज किया... ओ-हो! हाथ खोल कर तंबाकू रखा है बिरजू की माँ ने! और एक वह है सहुआइन!



पृष्ठ ९ का शेष...प्रेरणा....

राम कहो! उस रात को अफीम की गोली की तरह एक मटर-भर तंबाकू रख कर चली गई गुलाब-बाग मेले और कह गई कि डिब्बी-भर तंबाकू है।

बिरजू की माँ चूल्हा सुलगाने लगी। चंपिया ने शकरकंद को मसल कर गोले बनाए और बिरजू सिर पर कड़ाही ओंथा कर अपने बाप को दिखलाने लगा – ‘मलेटरी टोपी! इस पर दस लाठी मारने पर भी कुछ नहीं होगा!’

सभी ठठा कर हँस पड़े। बिरजू की माँ हँस कर बोली, ‘ताखे पर तीन-चार मोटे शकरकंद हैं, दे दे बिरजू को चंपिया, बेचारा शाम से ही...’

‘बेचारा मत कहो मैया, खूब सचारा है% अब चंपिया चहकने लगी, %तुम क्या जानो, कथरी के नीचे मुँह क्यों चल रहा था बाबू साहब का!’

‘ही-ही-ही!’

बिरजू के टूटे दूध के दाँतों की फाँक से बोली निकली, ‘बिलैक-मारटिन में पाँच शकरकंद खा लिया! हा-हा-हा!’

सभी फिर ठठा कर हँस पड़े। बिरजू की माँ ने फुआ का मन रखने के लिए पूछा, ‘एक कनवाँ गुड़ है। आधा दूँ फुआ?’

फुआ ने गदगद हो कर कहा, ‘अरी शकरकंद तो खुद मीठा होता है, उतना क्यों डालेगी?’

जब तक दोनों बैल दाना-घास खा कर एक-दूसरे की देह को जीभ से चाटें, बिरजू की माँ तैयार हो गई। चंपिया ने छोट की साड़ी पहनी और बिरजू बटन के अभाव में पैंट पर पटसन की डोरी बँधवाने लगा।

बिरजू के माँ ने आँगन से निकल गाँव की ओर कान लगा कर सुनने की चेष्टा की – ‘उँहूँ, इतनी देर तक भला पैदल जानेवाले रुके रहेंगे?’

पूर्णिमा का चाँद सिर पर आ गया है। ...बिरजू की माँ ने असली रुपा का मँगटिका पहना है आज, पहली बार। बिरजू के बप्पा को हो क्या गया है, गाड़ी जोतता क्यों नहीं, मुँह की ओर एकटक देख रहा है, मानो नाच की लाल पान की...

गाड़ी पर बैठते ही बिरजू की माँ की देह में एक अजीब गुदगुदी लगने लगी। उसने बाँस की बल्ली को पकड़ कर कहा, ‘गाड़ी पर अभी बहोत जगह है। ...जरा दाहिनी सड़क से गाड़ी हाँकना।’

बैल जब दौड़ने लगे और पहिया जब चूँ-चूँ करके घरघराने लगा तो बिरजू से नहीं रहा गया-‘उड़नजहाज की तरह उड़ाओ बप्पा!’

गाड़ी जंगी के पिछवाड़े पहुँची। बिरजू की माँ ने कहा, ‘जरा जंगी से पूछो न, उसकी पुतोहू नाच देखने चली गई क्या?’

गाड़ी के रुकते ही जंगी के झोंपड़े से आती हुई रोने की आवाज स्पष्ट हो गई। बिरजू के बप्पा ने पूछा, ‘अरे जंगी भाई, काहे कन्न-रोहत हो रहा है आँगन में?’

जंगी घूर ताप रहा था, बोला, ‘क्या पूछते हो, रंगी बलरामपुर से लौटा नहीं, पुतोहिया नाच देखने कैसे जाए! आसरा देखते-देखते उधर गाँव की सभी औरतें चली गई।’

‘अरी टीशनवाली, तो रोती है काहे!’ बिरजू की माँ ने पुकार कर कहा, ‘आ जा झट से कपड़ा पहन कर। सारी गाड़ी पड़ी हुई है!

बेचारी! ...आ जा जल्दी!’

बगल के झोंपड़े से राधे की बेटी सुनरी ने कहा, ‘काकी, गाड़ी में जगह है? मैं भी जाऊँगी।’

बाँस की झाड़ी के उस पार लरेना खवास का घर है। उसकी बहू भी नहीं गई है। गिलट का झुमकी-कड़ा पहन कर झमकती आ रही है।

‘आ जा! जो बाकी रह गई हैं, सब आ जाएँ जल्दी!’

जंगी की पुतोहू, लरेना की बीवी और राधे की बेटी सुनरी, तीनों गाड़ी के पास आई। बैल ने पिछला पैर फेंका। बिरजू के बाप ने एक भद्दी गाली दी – ‘साला! लताड़ मार कर लँगड़ी बनाएगा पुतोहू को!’

सभी ठठा कर हँस पड़े। बिरजू के बाप ने घूँघट में झुकी दोनों पुतोहूओं को देखा। उसे अपने खेत की झुकी हुई बालियों की याद आ गई।

जंगी की पुतोहू का गौना तीन ही मास पहले हुआ है। गौने की रंगीन साड़ी से कड़वे तेल और लठवा-सिंदूर की गंध आ रही है। बिरजू की माँ को अपने गौने की याद आई। उसने कपड़े की गठरी से तीन मीठी रोटियाँ निकाल कर कहा, ‘खा ले एक-एक करके। सिमराह के सरकारी कूप में पानी पी लेना।’

गाड़ी गाँव से बाहर हो कर धान के खेतों के बगल से जाने लगी। चाँदनी, कातिक की! ...खेतों से धान के झरते फूलों की गंध आती है। बाँस की झाड़ी में कहीं दुइड़ी की लता फूली है। जंगी की पुतोहू ने एक बीड़ी सुलगा कर बिरजू की माँ की ओर बढ़ाई। बिरजू की माँ को अचानक याद आई चंपिया, सुनरी, लरेना की बीवी और जंगी की पुतोहू, ये चारों ही गाँव में बैसकोप का गीत गाना जानती हैं। ...खूब!

गाड़ी की लीक धनखेतों के बीच हो कर गई। चारों ओर गौने की साड़ी की खसखसाहट-जैसी आवाज होती है। ...बिरजू की माँ के माथे के मँगटिके पर चाँदनी छिटकती है।

‘अच्छ, अब एक बैसकोप का गीत गा तो चंपिया! ...डरती है काहे? जहाँ भूल जाओगी, बगल में मासटरनी बैठी ही है!’

दोनों पुतोहूओं ने तो नहीं, किंतु चंपिया और सुनरी ने खँखार कर गला साफ किया।

बिरजू के बाप ने बैलों को ललकारा – ‘चल भैया! और जरा जोर से!... गा रे चंपिया, नहीं तो मैं बैलों को धीरे-धीरे चलने को कहूँगा।’

जंगी की पुतोहू ने चंपिया के कान के पास घूँघट ले जा कर कुछ कहा और चंपिया ने धीमे से शुरु किया – ‘चंदा की चाँदनी...’

बिरजू को गोद में ले कर बैठी उसकी माँ की इच्छा हुई कि वह भी साथ-साथ गीत गाए। बिरजू की माँ ने जंगी की पुतोहू को देखा, धीरे-धीरे गुनगुना रही है वह भी। कितनी प्यारी पुतोहू है! गौने की साड़ी से एक खास किस्म की गंध निकलती है। ठीक ही तो कहा है उसने! बिरजू की माँ बेगम है, लाल पान की बेगम! यह तो कोई बुरी बात नहीं। हाँ, वह सचमुच लाल पान की बेगम है!

बिरजू की माँ ने अपनी नाक पर दोनों आँखों को केंद्रित करने की चेष्टा करके अपने रुप की झाँकी ली, लाला साड़ी की झिलमिल किनारी, मँगटिका पर चाँद। ...बिरजू की माँ के मन में अब और कोई लालसा नहीं। उसे नींद आ रही है।

अध्यात्म

## ध्यान-विधियों के अनिवार्य तत्व



ध्यान में कुछ अनिवार्य तत्व हैं, विधि कोई भी हो, वे अनिवार्य तत्व हर विधि के लिए आवश्यक हैं।

**1. एक विश्रामपूर्ण अवस्था**—मन के साथ कोई संघर्ष नहीं, मन पर कोई नियंत्रण नहीं; कोई एकाग्रता नहीं। दूसरा, जो भी चल रहा है उसे बिना किसी हस्तक्षेप के, बस शांत सजगता से देखो भर-शांत होकर, बिना किसी निर्णय और मूल्यांकन के, बस मन को देखते रहो। ये तीन बातें ह-विश्राम, साक्षित्व, अ-निर्णय-और धीरे-धीरे एक गहन मौन तुम पर उतर आता है। तुम्हारे भीतर की सारी हलचल समाप्त हो जाती है। तुम हो, लेकिन मैं हूँ का भाव नहीं है-बस एक शुद्ध आकाश है। ध्यान की एक सौ बारह विधियाँ हैं; मैं उन सभी विधियों पर बोला हूँ। उनकी संरचना में भेद है, परंतु उनके आधार वही हैं-विश्राम, साक्षित्व और एक निर्विवेचनापूर्ण दृष्टीकोण।

**2. खेलपूर्ण रहो**—लाखों लोग ध्यान से चूक जाते हैं क्योंकि ध्यान ने गलत अर्थ ले लिए हैं। ध्यान बहुत गंभीर लगता है, उदास लगता है, उसमें कुछ चर्च वाली बात आ गई है; लगता है यह उन्ही लोगों के लिए है जो या तो मर गए हैं या करीब-करीब मर गए हैं-जो उदास हैं, गंभीर हैं, जिनके चेहरे लंबे हो गए हैं; जिन्होंने उत्साह, मस्ती, प्रफुल्लता, उत्सव सब खो दिया है। यही तो ध्यान के गुणधर्म हैं-जो व्यक्ति विस्तव में ध्यानी है वह खेलपूर्ण होगा; जीवन उसके लिए मस्ती है, जीवन एक लीला, एक खेल है। वह जीवन का परम आनंद होता है। वह गंभीर नहीं होता, विश्रामपूर्ण होता है।

**3. धैर्य रखो-जल्दबाजी मत करो**—बहुत बार जल्दबाजी से ही देर लग जाती है। जब तुम्हारी प्यास जगे, तो धैर्य से प्रतीक्षा करो-जितनी गहन प्रतीक्षा होगी, उतने जल्दी ही वह आएगा। तुमने बीज बो दिए, अब छाया में बैठ रहो और देखो क्या होता है। बीज टूटेगा, खिलेगा, लेकिन तुम प्रक्रिया को तेज नहीं कर सकते। क्या हर चीज के लिए समय नहीं चाहिए? तुम कार्य तो करो, लेकिन परिणाम परमात्मा पर छोड़ दो। जीवन में कुछ भी व्यर्थ नहीं जाता-विशेषतः सत्य की ओर उठाए गए कदम। परंतु कई बार अधैर्य उठता है; प्यास के साथ ही आता है अधैर्य, पर वह बाधा है। प्यास को बचा लो और अधैर्य को जाने दो। अधैर्य को प्यास के साथ मिलाओ मत। प्यास में उत्कंठा तो होती है परंतु कोई संघर्ष नहीं होता; अधैर्य में संघर्ष होता है और कोई उत्कंठा नहीं होती। अभीप्सा में प्रतीक्षा तो होती है परंतु कोई मांग नहीं होती; अधैर्य में मांग होती है और कोई प्रतीक्षा नहीं होती। प्यास में तो मौन आसू होते हैं; अधैर्य में बेचैन संघर्ष होता है। सत्य पर आक्रमण नहीं किया जा सकता; वह तो समर्पण से पाया जाता है, संघर्ष से नहीं। उसे समग्र समर्पण से जीता जाता है।

**4. परिणाम मत खोजो**—अहंकार परिणामोन्मुख है, मन सदा परिणाम के लिए लालायित रहता है। मन का कर्म में कोई रस नहीं होता, परिणाम में ही रस होता है-इससे मुझे क्या मिलेगा? यदि कृत्य से गुजरे बिना ही मन परिणाम पा सके, तो वह छोटे मार्ग का ही चुनाव करेगा। यही कारण है कि शिक्षित लोग चालाक हो जाते हैं, क्योंकि वे छोटे मार्ग खोजने में सक्षम होते हैं। यदि तुम न्यायोचित ढंग से धन कमाओ तो तुम्हारा पूरा जीवन भी इसमें लग सकता है। लेकिन यदि तुम तस्कारी से, जुए से, या किसी और ढंग से-राजनेता, प्रधानमंत्री या राष्ट्रपति बन कर-धन कमा सको तो सभी छोटे मार्ग तुम्हें उपलब्ध होंगे। शिक्षित व्यक्ति चिलाक हो जाता है। वह बुद्धिमान नहीं बनता, बस, चालाक हो जाता है। वह इतना चालाक हो जाता है कि बिना

कुछ किए सब कुछ पा लेना चाहता है। ध्यान उन्ही लोगों को घटता है जो परिणामोन्मुख नहीं होते। ध्यान परिणामोन्मुख न होने की दशा है।

**5. बेहोशी का भी सम्मान करो**—जब होश में हो तो होश का आनंद लो, और जब बेहोश हो तो बेहोशी का आनंद लो। कुछ भी गलत नहीं है, क्योंकि बेहोशी एक विश्राम की भाँति है। वरना होश एक तनाव हो जाता। यदि तुम चैबीस घंटे जागे रहो तो तुम कितने दिन, सोचते हो कि, जीवित रहोगे? भोजन के बिना मनुष्य तीन महीने जी सकता है; नींद के बिना तीन सप्ताह में ही वह विक्षिप्त हो जाएगा और वह आत्मघात का प्रयास करेगा। दिन में तुम सजग रहते हो; रात तुम विश्राम करते हो, और वह विश्राम तुम्हें दिन में, ताजे होकर, और सजग होने में मदद करता है। ऊर्जाएं विश्राम की एक अवधि से गुजर जाती हैं और सुबह ज्यादा जीवंत हो जाती हैं। ध्यान में भी ऐसा ही होगा। कुछ क्षण के लिए तुम बिलकुल होश में होते हो, शिखर पर होते हो और फिर कुछ क्षण के लिए घाटी में पहुँच जाते हो, विश्राम करते हो। होश विदा हो गया, तुम भूल गए। लेकिन इसमें क्या गलत है? यह तो सीधी बात है। बेहोशी से फिर होश उठेगा, ताजा होकर, युवा होकर और यह चलता रहेगा। यदि तुम दोनों का आनंद ले सको तो तुम तीसरे हो जाते हो, और यह सूत्र समझने जैसा है यदि तुम दोनों का आनंद ले सको, इसका अर्थ हुआ कि तुम दोनों ही नहीं हो-न होश, न बेहोशी-तुम तो वह हो जो दोनों का आनंद लेता है। तब पार का कुछ प्रवेश कर जाता है। वास्तव में, यही वास्तविक साक्षी है। तुम सुख का आनंद लेते हो, उसमें क्या गलत है? जब सुख गया और तुम दुखी हो गए तो दुख में क्या गलत है? उसका आनंद लो। एक बार तुम दुख का आनंद लेने में सक्षम हो जाओ तो तुम दोनों ही नहीं रहते। और यह मैं तुम्हें कहता हूँ-यदि तुम दुख का आनंद ले सको, तो उसका अपना सौंदर्य है। सुख थोड़ा उथला है; दुख बहुत गहरा है, उसमें एक गहराई है। जो मनुष्य कभी दुखी नहीं हुआ वह उथला रहेगा, सतह पर ही रहेगा। दुख अधेरी रात की तरह बहुत गहरा है। अधंकार में एक मौन है, और एक उदासी भी। सुख तो छलकता है; उसमें एक आवाज होती है। वह तो पर्वतों की सरिता जैसा है; आवाज पैदा होती है। लेकिन पर्वतों में कोई भी नदी बहुत गहरी नहीं हो सकती; सदा उथली होती है। जब नदी मैदानों में पहुँचती है तो गहरी हो जाती है, लेकिन फिर आवाज नहीं होती। नदी बहती चलती है जैसे बह ही न रही हो। दुख में एक गहराई है।

झंझट क्यों खड़ी करनी? जब सुखी हो, तो सुखी होओ, उसका आनंद लो। उससे तादात्म्य मत बनाओ। जब मैं कहता हूँ- सुखी होओ, तो मेरा अर्थ है- उसका आनंद लो। उसे एक जलवायु बन जाने दो, जो बदल जाएगी। सुबह दोपहर में बदल जाती है, दोपहर शाम में, और फिर रात आ जाती है। सुख को अपने चारों ओर एक वातावरण बन जाने दो। उसका आनंद लो, और जब उदासी आए तो उसका भी आनंद लो। कुछ भी हो, मैं तुम्हें उसका आनंद लेना सिखाता हूँ। शांत बैठो और उदासी का आनंद लो, और अचानक उदासी उदासी नहीं रहती; वह स्वयं में एक सुंदर, शांत और मौन क्षण बन जाती है। उसमें कोई गलती नहीं है। और फिर परम कीमिया घटित होती है, वह बिंदु आता है जहाँ तुम अचानक अनुभव करते हो कि तुम दोनों ही नहीं हो-न सुख, न दुख। तुम दृष्टा हो-तुम शिखरों को भी देखते हो और घाटियों को भी; परंतु तुम दोनों ही नहीं हो। एक बार यह दशा उपलब्ध हो जाए, तो तुम हर बात का उत्सव मनाते चले जा सकते हो। फिर तुम जीवन का उत्सव मनाते हो, और मृत्यु का भी उत्सव मनाते हो।



सिनेमा

## रामायण ज्ञान पर ट्रेल हो रही सोनाक्षी के समर्थन में आए महाभारत के दुर्योधन, मुकेश खन्ना पर साधा निशाना

मुकेश खन्ना को सोनाक्षी ने नहीं बल्कि उनके पिता शत्रुघ्न सिन्हा ने सामने आकर दिया था। सोनाक्षी के समर्थन में पिता के बाद अब मुकेश के साथ महाभारत में काम कर चुके उन्हीं के साथी महाभारत में दुर्योधन का किरदार निभाने वाले पुनीत इस्सर ने दिया है।



लॉकडाउन के दौरान एक तरफ दूरदर्शन पर रामायण का टेलीकास्ट की जा रही है तो दूसरी तरफ सोशल मीडिया पर लगातार बॉलीवुड एक्ट्रेस सोमाक्षी सिंहा के रामायण ज्ञान को लेकर उन्हें ट्रेल किया जा रहा है। हाल ही में शक्तिमान मुकेश खन्ना ने सोनाक्षी के रामायण ज्ञान को लेकर तंज कसा था। मुकेश खन्ना के इस बयान के सामने आने के बाद से ही सोनाक्षी को एक बार फिर ट्रेल किया जाने लगा था।

### दुर्योधन ने किया सोनाक्षी का बचाव

मुकेश खन्ना को सोनाक्षी ने नहीं बल्कि उनके पिता शत्रुघ्न सिन्हा ने सामने आकर दिया था। सोनाक्षी के समर्थन में पिता के बाद अब मुकेश के साथ महाभारत में काम कर चुके उन्हीं के साथी महाभारत में दुर्योधन का किरदार निभाने वाले पुनीत इस्सर ने दिया है। पुनीत इस्सर मुकेश की बातों से बिलकुल सहमत नहीं नजर आये। उन्होंने मुकेश की बातों का जवाब देते हुए कहा कि मुकेश तो सोनाक्षी के लिए ऐसा नहीं कहना चाहिए था। सोनाक्षी ड्रूकी स्टूडेंट हैं, मेरे बच्चे भी वहां पढ़े थे। अगर उन्हें रामायण के एक सवाल का जवाब नहीं पता, इसका मतलब ये तो नहीं कि दुनिया का अंत हो गया।

डीडी पर जब शक्तिमान को रिपीट टेलीकास्ट किया गया तब से सुर्खियां बटौर रहे मुकेश खन्ना ने हाल ही में महाभारत बनाने को लेकर निर्माता एकता कपूर पर भी निशाना साधा था। इस बात पर भी पुनित ने जवाब देते हुए कहा कि मुकेश को एकता पर ऐसा बयान नहीं देना चाहिए था। वो कहते हैं- महाभारत पर किसी का कॉपीराइट नहीं है। हर किसी को वो बनाने का हक है। साजिद नाडियाडवाला के दादा जी ने भी महाभारत पर फिल्म बनाई थी और वो सुपरहिट साबित हुई थी।

### क्या कहा शत्रुघ्न सिन्हा ने सोनाक्षी के बचाव में

शत्रुघ्न सिन्हा ने मुकेश खन्ना के तंज पर सोनाक्षी का बचाव करते हुए कहा कि कुछ लोगों को मेरी बेटी से इस लिए प्रोब्लम है क्योंकि मेरी बेटी ने रामायण के एक सवाल का जवाब नहीं दिया। मैं सोनाक्षी को निशाना बनने वालों से पूछना चाहता हूं उन्हें रामायण का एक्सपर्ट बनाया है। किसने उन्हें हिंदू धर्म का रक्षक बनाया है।

शत्रुघ्न सिन्हा ने अपनी बेटी की तरीफ करते हुए कहा कि वह बहुत अच्छी बेटी है। एक्टर ने कहा कि मैं अपने तीनों बच्चों को बहुत प्यार करता हूं। रही बात सोनाक्षी की तो उनके अंदर बहुत से गुण हैं। वह अपने दम पर स्टार बनीं हैं। किसी ने उन्हें स्टार नहीं बनाया। हम हिंदू हैं और हमसे कोई हिंदू होने का अधिकार नहीं छीन सकता। एक सवाल को लेकर सोनाक्षी की हर चीज को जज नहीं किया जा सकता।

### मुकेश खन्ना ने क्या कहा था

दूरदर्शन पर शक्तिमान एक बार फिर आ रहा है इसी बार बात करते हुए जब मुकेश खन्ना से सवाल रामायण-महाभारत पर पूछा गया तो मुकेश खन्ना ने कहा कि सोनाक्षी सिन्हा इस समय घर पर है और उन्हें रामायण महाभारत जरूर देखनी चाहिए ताकि हिंदू होने के नाते उन्हें हमारे पुराणों का ज्ञान हो सके। उनके मुताबिक सोनाक्षी जैसे लोगों को देश की पौराणिक कथाओं के बारे में कोई जानकारी नहीं है।

### सोनाक्षी को नहीं पता था कि हनुमान किसके लिए संजीवनी लाए थे

अमिताभ बच्चन के सुपरहिट शो कौन बनेगा करोड़पति में जब सोनाक्षी सिंहा खेलने गयी थी तो उनसे सवाल किया गया था कि हनुमान जी संजीवनी बूटी किसके लिए लाए थे? इस सवाल का जवाब सोनाक्षी सिंहा नहीं दे सकीं थी। सोशल मीडिया पर उस दौरान सोनाक्षी को खूब ट्रेल किया गया था। अब जब एक बार फिर रामायण चर्चा में है तो सोनाक्षी के रामायण ज्ञान की भी चर्चा हो रही है।

सिनेमा

## अनुपमा का फेसबुक अकाउंट हुआ है



मुंबई-बीते कुछ समय पहले भारतीय क्रिकेट टीम के स्टार गेंदबाज जसप्रीत बुमराह के साथ रिलेशनशिप की खबरों को लेकर चर्चा में रही साउथ की फिल्मों की मशहूर एक्ट्रेस अनुपमा परमेश्वरन आजकल काफी गुस्से में हैं। उनके इस गुस्से की वजह है उनके फेसबुक अकाउंट से की गई छेड़छाड़। दरअसल, अनुपमा परमेश्वरन का फेसबुक अकाउंट हैक हो गया है, जिसके बाद हैकर ने उनके अकाउंट में कुछ मॉर्फेड तस्वीरें डाल दी, जिससे अनुपमा काफी गुस्से में हैं। फेसबुक अकाउंट हैक होने की खबर मिलते ही एक्ट्रेस ने साइबर।

इम में इसकी शिकायत की है। वहीं एक्ट्रेस ने अपने पेंस को भी इसकी जानकारी दी। अन्य सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के जरिए उन्होंने अपने फेसबुक अकाउंट के हैक होने की जानकारी पेंस को दी है। अकाउंट हैक होने से परेशान अनुपमा ने अपनी वुछ ऑरिजनल और मॉर्फेड तस्वीरें भी शेयर की हैं और पेंस को जानकारी दी है कि कैसे हैकर ने उनकी तस्वीरों से छेड़छाड़ की है। हैकर्स पर भड़कते हुए अनुपमा ने कहा कि, यह उनके लिए काफी डिस्टर्बिंग था। ऐसा काम करने वालों को कुछ प्रॉडक्टिव करने पर ध्यान देना चाहिए। बजाय किसी की प्राइवैसी में दखल देने के, वह कुछ और काम भी कर सकते हैं। अपनी मॉर्फेड और ऑरिजनल फोटो शेयर करते हुए उन्होंने कहा कि, 'मैं उन घटिया लोगों जिनके पास इन सब फालतू कामों के लिए वक्त है, उनसे पूछना चाहती हूं कि क्या आपके घर पर आपकी मां-बहन नहीं हैं.'

उन्होंने आगे लिखा, अपने दिमाग का इस्तेमाल किसी प्रॉडक्टिव काम के लिए करते तो अच्छा होता। इन बेवकुफाना हरकतों से आपको कुछ नहीं मिलने वाला, बताना चाहती थी.' अनुपमा के इस पोस्ट के बाद उनके पेंस लगातार इस पर कमेंट्स के जरिए अपनी प्रतिक्रिया दे रहे हैं।

### स्वास्थ्य

## दूध होता है पोष्टीकता से भरपूर

कु शोभा

**ठंडे दूध को भी सेहत के लिए काफी लाभदायक माना जाता है। यह जलन होने पर एसिडिटी को कम करके आपको राहत पहुंचाता है। इसके अलावा, कैल्शियम की उच्च मात्रा एसिड निर्माण को रोक सकती है और अतिरिक्त एसिड को अवशोषित कर सकती है।**



पर एसिडिटी को कम करके आपको राहत पहुंचाता है। इसके अलावा, कैल्शियम की उच्च मात्रा एसिड निर्माण को रोक सकती है और अतिरिक्त एसिड को अवशोषित कर सकती है। इतना ही नहीं, यह इलेक्ट्रोलाइट्स के साथ पैक किया जाता है जो आपके शरीर को निर्जलीकरण से लड़ने में मदद कर सकता है। सुबह-सुबह ठंडा दूध पीने से आप दिन भर हाइड्रेट रह सकते हैं। हालांकि, सोने के समय के दौरान इससे बचें क्योंकि यह पाचन संबंधी मुद्दों को बढ़ावा दे सकता है। ठंडे दूध को एक प्राकृतिक फेस क्लींजर के रूप में भी जाना जाता है।

### कौन सा है बेहतर

दूध स्वयं में ही एक संपूर्ण आहार है और इसका सेवन एक से अधिक तरीकों से किया जा सकता है। हालांकि आपके लिए कौन सा दूध बेहतर है, यह समय और आपकी स्वास्थ्य स्थिति पर निर्भर करता है। मसलन, सुबह के समय ठंडे दूध का सेवन अच्छा है, जबकि रात में गर्म दूध का सेवन किया जाना चाहिए। इसी तरह, एसिड रिफ्लक्स होने की स्थिति में ठंडा दूध पीना आपके लिए काफी अच्छा है। वहीं, डायरिया व अपच जैसी स्थिति में गर्म दूध सेहत को लाभ पहुंचाता है।

दूध को संपूर्ण आहार माना जाता है। इसमें मौजूद पोषक तत्व बेहतर स्वास्थ्य के लिए काफी आवश्यक माने जाते हैं। आमतौर पर, बच्चों से लेकर बूढ़े व्यक्ति तक को इसे पीने की सलाह दी जाती है। वैसे हर व्यक्ति दूध को अपनी पसंद के अनुसार सेवन करते हैं। जहां कुछ लोगों को गरम दूध पीना पसंद है, वहीं कुछ लोग ठंडे दूध का सेवन करते हैं। तो चलिए आज हम आपको बताते हैं कि दूध पीने का सही तरीका क्या है-

### गर्म दूध के फायदे

गर्म दूध का एक लाभ यह है कि यह आसानी से पच जाता है। साथ ही दस्त और सूजन

सहित अनकॉमफर्टबल डाइजेस्टिव लक्षणों को रोकता है। इसके अलावा अच्छी नींद के लिए भी गर्म दूध पीने की सलाह दी जाती है। अगर रात में गर्म दूध का सेवन किया जाए तो वह नर्वस सिस्टम को रिलैक्स करता है, जिससे काफी अच्छी नींद आती है। साथ ही इसमें ट्रिप्टोफेन नामक एमिनो एसिड होता है जो नींद पैदा करने वाले रसायन सेरोटोनिन और मेलाटोनिन का उत्पादन करता है जो आपको बेहतर नींद में मदद कर सकता है।

### ठंडे दूध के फायदे

ठंडे दूध को भी सेहत के लिए काफी लाभदायक माना जाता है। यह जलन होने



## ट्रम्प की सीमा विवाद पर फिर मध्यस्थता की पेशकश

**वाशिंगटन**—भारत और चीन के बीच सीमा विवाद पर मध्यस्थता करने की पेशकश दोहराते हुए अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से बात की जो दोनों देशों के बीच बड़े टकराव को लेकर अच्छे मूड में नहीं है।

व्हाइट हाउस के ओवल कार्यालय पत्रकारों से बातचीत में ट्रम्प ने कहा कि भारत और चीन के बीच एक बड़ा टकराव चल रहा है। उन्होंने कहा, भारत में मुझे पसंद किया जाता है। मुझे लगता है कि इस देश में मीडिया मुझे जितना पसंद करता है उससे कहीं अधिक पसंद मुझे भारत में किया जाता है और मैं मोदी को पसंद करता हूँ। मैं आपके प्रधानमंत्री को बहुत पसंद करता हूँ। वह बहुत ही सज्जन व्यक्ति हैं। यह पूछे जाने पर कि क्या वह भारत और चीन के बीच सीमा पर बने हालात से चिंतित हैं, इस पर राष्ट्रपति ने कहा, भारत और चीन के बीच बड़ा टकराव है। दो देश और प्रत्येक की आबादी 1.4 अरब। दो देश जिनके पास बहुत शक्तिशाली सेनाएं हैं।

भारत खुश नहीं है और संभवतः चीन भी खुश नहीं है। ट्रम्प ने कहा, मैंने प्रधानमंत्री मोदी से बात की। चीन



के साथ जो भी चल रहा है वह उससे खुश नहीं हैं। इससे एक दिन पहले उन्होंने भारत और चीन के बीच मध्यस्थता की पेशकश की थी। ट्रम्प ने ट्वीट किया कि वह दोनों देशों के बीच मध्यस्थता करने के लिए तैयार, इच्छुक और सक्षम हैं। इस ट्वीट पर एक सवाल के जवाब में ट्रम्प ने अपनी पेशकश दोहराते हुए कहा कि अगर मदद के लिए बुलाया गया तो मैं मध्यस्थता करूंगा। अगर उन्हें लगता है कि इससे मदद मिलेगी तो मैं यह करूंगा। पूर्वी लद्दाख सीमा पर भारत

और चीन के बीच गतिरोध जारी रहने के बीच भारत ने कहा कि सीमा पर तनाव कम करने के लिये चीनी पक्ष के साथ बातचीत चल रही है। कहा - चीन के साथ सीमा विवाद को लेकर अच्छे मूड में नहीं हैं मोदी। मैंने प्रधानमंत्री मोदी से बात की, चीन के साथ जो भी चल रहा है वह उससे खुश नहीं हैं, संभवतः चीन भी खुश नहीं है

सूत्रों की जानकारी अनुसार मोदी-ट्रम्प के बीच हाल में कोई बातचीत नहीं हुई सरकार कहा कि

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के बीच हाल में कोई बातचीत नहीं हुई है। यह स्पष्टीकरण तब आया है जब ट्रम्प ने वाशिंगटन में कहा कि उन्होंने पूर्वी लद्दाख में चीन के साथ चल रहे भारत के सीमा विवाद को लेकर मोदी से बात की है। एक सूत्र ने कहा, मोदी और ट्रम्प के बीच आखिरी बातचीत चार अप्रैल को हाइड्रॉक्सीक्लोरोडीन के विषय पर हुई थी।

**चीन ने ट्रम्प के मध्यस्थता के प्रस्ताव को किया खारिज** बीजिंग-चीन ने भारत के साथ सीमा संबंधी मौजूदा गतिरोध समाप्त करने के लिए अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प के मध्यस्थता के प्रस्ताव को खारिज कर दिया। ट्रम्प ने भारत और चीन के बीच सीमा विवाद में मध्यस्थता करने की अचानक पेशकश की और कहा कि वह दोनों पड़ोसी देशों की सेनाओं के बीच जारी गतिरोध के दौरान तनाव कम करने के लिए तैयार, इच्छुक और सक्षम हैं। अमेरिका के इस प्रस्ताव पर पहली बार प्रतिक्रिया देते हुए चीन के विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता झाओ लीजियान ने कहा कि दोनों देश मौजूदा सैन्य संयम बरते।

## असंतुलित विकास का नतीजा है प्रवासी मजदूरों की समस्या-अरुण कुमार

**नई दिल्ली**—कोरोना वायरस संकट के कारण उत्पन्न प्रवासी मजदूरों की समस्या के बीच जानेमाने अर्थशास्त्री अरुण कुमार का कहना

है कि यह सरकार की गलत नीतियों और असंतुलित विकास का नतीजा है। प्रवासी मजदूरों की समस्या और उसके समाधान के

बारे में जेएनयू के पूर्व प्रोफेसर और वर्तमान में इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस के चेयरमैन प्रोफेसर अरुण कुमार से 'के पांच

सवाल' और उनके जवाब-सवाल-प्रवासी मजदूर अपने गांव-घरों को लौट रहे हैं। उससे बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश जैसे अपेक्षाकृत पिछड़े राज्यों की अर्थव्यवस्था पर क्या असर पड़ेगा? जवाब- इन राज्यों की अर्थव्यवस्था की स्थिति पहले से ही खराब है। इन प्रांतों की बचत दर राष्ट्रीय औसत से कम है और जो बचत है, उसका बड़ा हिस्सा भी दूसरे प्रांतों में उपयोग होता है

## एक साल सरकार के कार्याकाल में बीजेपी ने उपलब्धियां बताई, कांग्रेस ने कमियां गिनाई

**नई दिल्ली**— मोदी सरकार अपनी उपलब्धियां गिाने में जुटी है, वहीं कांग्रेस मोदी सरकार की नाकामियों को उजागर करने की कोशिश कर रही है। बीजेपी के नजरिए से देखें तो मोदी सरकार की उपलब्धियों में एक से बढ़कर एक फैसले और योजनाएं शामिल हैं, तो वहीं कांग्रेस की माने तो नाकामियों की फेहरिस्त भी छोटी नहीं है।

किसी सरकार को परखने के लिए एक साल का वक्त काफी है या नहीं ये विमर्श का विषय हो सकता है। लेकिन एक साल में ये तो पता चल ही जाता है कि उसके इरादें क्या हैं। मोदी सरकार ने 30 मई 2019 को शपथ ली थी और आज उसके दूसरे कार्यकाल के एक वर्ष पूरे हो गए। इन एक सालों में सरकार कभी चुनौतियों में घिरी तो कभी सीना ठोक कर अपना दम दिखाया।

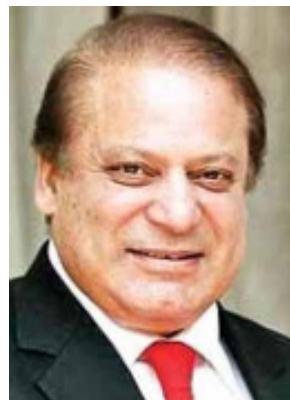
इस मौके पर मोदी सरकार अपनी उपलब्धियां गिाने में जुटी है, वहीं कांग्रेस मोदी सरकार की नाकामियों को उजागर करने की कोशिश कर रही है। बीजेपी के नजरिए से देखें तो मोदी सरकार की उपलब्धियों में एक से बढ़कर एक फैसले और योजनाएं शामिल हैं, तो वहीं कांग्रेस की माने तो नाकामियों की फेहरिस्त भी छोटी नहीं है।

बीजेपी के लिए कमाल के एक साल- बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने प्रेस कॉन्फ्रेंस करते हुए सरकार की उपलब्धियों के बारे में जानकारी दी। इसके अलावा उन्होंने कोरोना संकट से लड़ाई में सरकार द्वारा किए जा रहे प्रयासों पर भी बात की है। नड्डा ने कहा कि हमारी सरकार ने 70 साल की कमियां 6 साल में दूर की हैं। तीन तलाक से मुस्लिम महिलाओं के हितों की रक्षा की। पीएम मोदी ने सीएए के जरिए भारत में नागरिकता का रास्ता जरूरतमंदों के लिए खोला। मोदी के नेतृत्व में कोरोना के खिलाफ लड़ाई इस तरह लड़ी जिसमें भारत की स्थिति संभली हुई है। बाकी देशों की तुलना में भारत ने लॉकडाउन को समय पर लागू किया। मोदी सरकार ने 1.70 लाख करोड़ का प्रधानमंत्री गरीब कल्याण पैकेज दिया है। इसके जरिये 80 करोड़ लोगों के राशन की व्यवस्था की गई। एनआईए के दायरे को बढ़ाया। अगर भारत के बाहर भारत के खिलाफ कुछ होता है, तो उसे भी एनआईए की परिधि में लाया गया। हमारे जीवन में एक सपना था, जो सदियों पुराना था-श्रीराम का भव्य मंदिर निर्माण वो भी जल्द पूरा होगा।

कांग्रेस ने कार्यकाल पर उठाए सवाल-

कांग्रेस ने नरेंद्र मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल के एक साल पूरा होने के मौके पर दावा किया कि पिछला एक साल देश के लिए भारी निराशा, कुप्रबंधन और असीम पीड़ा देने वाले रहा है। पार्टी ने मोदी सरकार के दूसरे कार्यकाल की पहली वर्षगांठ के मौके पर 'बेबस लोग, बेरहम' सरकार' का नारा दिया है कि और सरकार की 'विफलताओं' की 16 सूत्री सूची जारी की है।

कांग्रेस के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने वीडियो लिंक के माध्यम से संवाददाताओं से कहा, "भारी निराशा, आपराधिक कुप्रबंधन एवं असीम पीड़ा का साल सातवें साल की शुरुआत में भारत एक ऐसे मुकाम पर आकर खड़ा है, जहां देश के नागरिक सरकार द्वारा दिए गए अनगिनत घावों व निष्ठुर असंवेदनशीलता की पीड़ा सहने को मजबूर हैं।" मोदी सरकार के 6 साल में 32,868 बैंक फ्रांई हुए, जिनमें आम आदमी के 2 लाख 70 हजार 513 करोड़ रुपए थे 10% कांग्रेस महासचिव ने कहा कि एक तरफ बैंकों की सेहत खराब हो रही है तो दूसरी तरफ मोदी सरकार घोटालेबाजों का लोन बढ़े खाते में डाल रही है।



## पाकिस्तान के पूर्व प्रधानमंत्री नवाज शरीफ के खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी

अब्दुल घनी मजीद- को समन जारी किया था। गिलानी और घनी अदालत के समक्ष पेश हुए जबकि शरीफ और जरदारी नहीं आए।

पूर्व राष्ट्रपति जरदारी ने व्यक्तिगत उपस्थिति से छूट देने का आवेदन दिया था जिसे अदालत ने स्वीकार कर लिया, लेकिन शरीफ की ओर से कोई पेश नहीं हुआ जिसके बाद न्यायाधीश ने गिरफ्तारी वारंट जारी किया। अदालत ने शरीफ और जरदारी सहित सभी आरोपियों को 11 जून को होने वाली अगली सुनवाई में पेश होने को कहा। इससे पहले जनवरी में एनएबी ने पूर्व राज्याध्यक्षों के खिलाफ राष्ट्रीय खजाने से उपहार लेकर करदाताओं के पैसे को नुकसान पहुंचाने और उपहारों को तोशखाने में जमा नहीं कराने के मामले में मुकदमा चलाने की अनुमति दी थी। एनएबी के मुताबिक शरीफ और जरदारी ने केवल 15 प्रतिशत दाम देकर कारों को अपने नाम कराया जबकि घनी ने अवैध तरीके से उपहारों को लेने की प्रक्रिया में बदलाव किया जिससे राष्ट्रीय खजाने को नुकसान पहुंचा।

## मोदी नाम नहीं, मंत्र है जो ऊर्जा भरता है मुज्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान



**भोपाल**—प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के द्वितीय कार्यकाल का प्रथम वर्ष पूर्ण होने पर मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने प्रधानमंत्री मोदी सहित पूरे राष्ट्रवासियों को बधाई दी है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने इस अवसर पर अपने संदेश में कहा कि लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सिर्फ एक नाम नहीं है बल्कि वे देश की करोड़ों-करोड़ जनता के हृदय के हार हैं। वे दिलों पर राज करते हैं। भारत वर्ष की मुकुट मणि हैं। लोगों का उनके प्रति अनन्य प्रेम झलकता है। महान नेता प्रधानमंत्री मोदी ने गत छह वर्ष में एक भी अवकाश नहीं लिया। वे हमेशा भारत माता तथा अपनी जनता के लिए घनघोर और अथक परिश्रम करते रहते हैं। राष्ट्र को ऊँचाईयों तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि मोदी नाम में ही संदेश छिपा है। एम से मोटीवेशनल और मेहनती, ओ से ओजस्वी और भारत में छिपी अपारच्युनिटी को पहचानकर उसे निखारने का प्रयास करने वाले नेता। कोरोना की चुनौती को उन्होंने अवसर में बदला। चौहान ने कहा कि मोदी के डी का अर्थ है दूरदर्शिता रखने वाले, डायनमिक लीडरशिप और डेवलपमेंट की ओर ले जाने वाले नेता। आई से आशय है, इंस्पायर करने वाले, दृढ़ इच्छा-शक्ति से इंडिया को अलग पहचान देने वाले नेता। वे सभी को ऊर्जा और विश्वास से भरने का कार्य करते हैं। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि दुनिया प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को विकास पुरुष के नाम से जानती है।

मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा कि पूरा देश मोदी के आह्वान पर जुटा है। मोदी नाम नहीं एक मंत्र है, जो ऊर्जा भरता है। मुख्यमंत्री चौहान ने कहा कि हम भाग्यशाली हैं जो हमें प्रधानमंत्री मोदी के रूप में नेतृत्व करने वाला एक ऐसा नेता मिला है जिसने कश्मीर से धारा-370 की समाप्ति, नागरिकता कानून, अयोध्या मंदिर निर्माण, तीन तलाक के कानून के साथ ही आत्मनिर्भर भारत के लिए बीस लाख करोड़ के विशेष पैकेज से सभी के कल्याण के कदम उठाये हैं। मुख्यमंत्री चौहान ने आशा व्यक्त की कि प्रधानमंत्री मोदी इसी तरह राष्ट्रवासियों को प्रेरित करते रहेंगे, मनोबल बढ़ाते रहेंगे और दिलों पर राज करते रहेंगे।